

आशा भक्युधि
1034

ASHA ARCHIVES



ॐ नमः श्रीमहागणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुपादकस्थान नमः ॥ श्रीश्रीश्रीसिद्धिलक्ष्मिदद्याये नमः ॥
अथ महानवमीविधानं लिख्यते ॥ नवरात्रदूधकाठकुण्डिसंस्नानलंखनहाय ॥ वनसिंध
ज्जमकास्नानद्वय ॥ थलिलिङ्गवनावलिकुपातवाय ॥ वलिसंकलरिंजातान ॥ ॥ यजमान
पूष्यराजन ॥ अथादि ॥ वाक् ॥ यजमानस्य महानवमीपार्वत्यस्वप्नराग ॥ अर्चनपूजार्थं पूष्यर
जनसमर्पयामि ॥ श्रीसंवत् ॥ खड्गमा ॥ श्यामावका ॥ वन्दूक ॥ काकास ॥ महाकाल ॥ मार्कण्डेय
॥ यादवी ॥ डहूला ॥ यागान्तिकाग्नि ॥ उद्वासेव ॥ सिद्धिब्रह्मणादि ॥ वाक् ॥ ॥ पिथूकाठसंखलु
कथियार्तपूजाओपयक ॥ ॥ स्नान ॥ दुकारवायुबीजं तद्विषयवर्णवक्रपालितदूर्ध्वकालव
र्तुनियुक्तं तद्विषयवर्मवक्रिबीजं सहस्रं नन्दविन्दलयान्तं सिक्तकमलदलं कीलधामाद्य
वर्णदृष्टाकूटस्तुतिर्हृदयकूलमलं मन्त्रकुल्यहिपार्य ॥ ॥ वन ॥ श्रीखलुग्रन्थनन्दिश्रीगन्धाय
समनाह्वय ॥ आरुषितं ललातादौ ॥ वन्दनं प्रतिगृह्यतां ॥ वन्दनं लयितं पूज्यं पवित्रं पापनाशनं

आयदाहवतनिह्यलक्ष्मीवाचसदानिव ॥ सिद्धव ॥ वीरव्यवीमहावीरवीररुष्माविरुचिर्त
खिलाकाकर्षलाहवीर्षिदूनाबलमूलम ॥ सिद्धवतिलकं वगुरुवलीपायाद्यविधं सिनी आय
क्षेत्रवर्द्धनीखलसूर्यवाक्कावितंमामृतंमामहसर्वजनसदावगकत्रीलक्ष्मीसदासायतं मृत्यु
वृंजनकात्रिलाविजयतंकामध्ववीयाकुवः ॥ अक्षत ॥ अक्षतं अक्षकामार्थधर्मकामार्थसिद्धि
दंरूपितंलरुतंकामान् यत्रवयपालंगतिं ॥ जजमका ॥ यक्षाघवीर्तयत्रमंयविर्तुयजायत
जस्यरुजंयूत्रसु ॥ आयुक्षमाक्षयत्रमंयूत्रं यक्षाघवीर्तयत्रमंयुतजः ॥ स्नान ॥ नानापूष्यसूग
क्षानिमातायांकुसुमादयसोरायवूयसंयन्नपूष्यावाहनमूलम ॥ अथदवाचर्चनं ॥ शित
त्वनायम्य ॥ खुंकांआत्मतत्वायसाहा ॥ खुंकांविद्यातत्वायसाहा ॥ खुंकांनिवतत्वायसाहा ॥ खुंकांकां
कुं सर्वतत्वायसाहा ॥ सूर्यार्घ्य ॥ मूयादि ॥ वाक् ॥ वधुर्नवीजमूद्रय तस्यायत्रिनिर्वन्ययत् ॥ आ
दिमध्यावसानंहु ॥ अग्निप्रयविरुचिर्त ॥ चर्मलादीपितं कृत्वा सावित्रावेनमूद्रयत् ॥ अथकूटव

[illegible]

२१॥ **ॐ** सकल लक्षण प्रमथ निज न कल कि धाम्ना अश्रय क न त ल वृष्टा ह्यं न मः ॥ २
धन कि धाम्ना मध्या मा ह्यं न मः ॥ **ॐ** सकल दू वि ता नि **ॐ** क्लृप्त द ल नि स्व त नु ग कि धाम्ना अना मि का ह्यं
न मः ॥ **ॐ** सर्वा य दाम्ना धित त्र लि अ ल फ ग कि धाम्ना क नि षा ह्यं न मः ॥ **ॐ** ति क रं न्या मः ॥ **ॐ** न
मः सर्व सिद्धि या गि नी ह्यः ॥ पूर्व व कु ना थ पा दू कां ॥ **ॐ** न मः सर्व सिद्धि मा ह्य द कि ल व कु ना थ
पा दू कां ॥ **ॐ** न मा नि ह्य दि ता न न्द न दि ता यो ड रु व व कु ना थ पा दू कां ॥ **ॐ** सकल क ल व कु ना थि
का यो घा नि म व कु ना थ पा दू कां ॥ **ॐ** रु ग व र्ये व लु का पा लि न्यो ड रु व कु ना थ पा दू कां ॥ **ॐ** ति व कु न्या
मः ॥ **ॐ** य न म हं सि ति सर्व कृ ता ग कि धाम्ना द द या य न मः ॥ **ॐ** नि र्वा ण मा र्ज द ह पि ग कि धाम्ना
नि त्र म ह्य ह्य ॥ **ॐ** वि ष मा य न्न व य ग म नि अ ना दि वा धन कि धाम्ना नि र्वा ये व ष ट् ॥ **ॐ** सकल दू वि
ता नि ष क्लृप्त द ल नि स्व त नु ग कि धाम्ना क व त्रा य दू ॥ **ॐ** सर्वा य दाम्ना धित त्र लि अ ल फ ग कि धाम्ना
न नु क या य वी ष ट् ॥ **ॐ** सकल ल ग कृ प्र म थ नि अ न क ल कि धाम्ना अश्रय रु ट् ॥ **ॐ** न्या मः ॥ ॥
मं कृ म ध्या ॥ यं द दि ॥ था ना लो ॥ ॐ मू र्व ॥ क्री वा म ना ना यू ट् ॥ दू द द ना सा यू ट् ॥ हां वा म न न ॥ **ॐ** द

[illegible]

[illegible]

लीगलीगीगसयात्मिकानूयहगाचिगा। त्वंकुवसा। मलासनसंरागिनीषादगान्कामृतावि
 द्संदाहिनीस्यन्ददंरुता। गवसम्यकयवानन्दनिर्वाणसौख्यपदाहेववीहेववायानका
 गानूगकयवामालनीवृद्धमालाचिंतवृद्धेगकिं॥ स्वगामिद्विया। गन्धवीसिद्धमाताविदुः॥ गवृवा
 नातिथाल्यर्पुवीवावीविषुद्धागिवा। मद्धवा। गन्धविमाहकासिद्धमिद्धाक्रियामनलासिद्धलक्ष्मी
 विरूति॥ संरूतिर्नति॥ गान्धतास्यातिनावायणीवकवलाकनालक्षणा। मन्वूयामहाकुक्ष्या। ग
 प्रियात्वजयन्त्याजितावृद्धसंमाहिनी। त्वनवात्माख्यद्वयवात्संगयानागिता। मन्वुमात्रान्। गेम्
 श्रिर्वीवपानान्वकै॥ मूरुकैश्चसंयसेदविषय॥ मृतेर्दिष्टयानात्सर्वेर्मूलककालकापिलिनी। व
 कजन्मदिजन्मविजन्मवकु॥ पञ्चवद्यपजन्माहुवे॥ गाम्कवेस्तेधनात्रे॥ पुत्रे॥ रुद्रुषेस्पर्यसंमयमां
 सप्रियामन्वविद्यावतागामि। रिर्मूलककालकापालिरिदिष्टयवर्थावृद्धेर्नमत्कावठंकावस्वाहा
 स्वाभाकाववीषट् वषट्कावर्ककावरुद्धावजाटिरिवनेश्चमन्वाकवावाविरिर्वामरुक्स्त्रिनेत्रकसू

जावलाजाधिरिः साधकेः पूरुकेः मारुकिर्मपुलेदीक्षितेयागिरिथागिनावृन्दमलापकेवृद्ध
 कीठालसेः पूरुसंयागिनीयागसिद्धिप्रदः दवित्वं पद्मपत्रापमेन्नायनेः सहपूः पुंसुसंयष्ट
 सातस्यादिद्यानूदीक्षितासकपातालसन्धवनीसिद्धिप्रदाहतावर्तका रुकितायः ४ पः १० दृष्ट
 कनकं कर्मकालं दिक्कालं त्रिकालं बहुः ४ पः ३ षड्यकवाक्षीपुत्रिः ४ संस्मरयः ४ सदामानवः ४ साधिवीरा
 प्रिगन्तार्थवपर्वताः यः पिसंयष्टसदविपुगानूवागमहालक्ष्मिपियाहमवीरान्यदावानूक
 श्रवन्मन्त्राणां महादायदक्षविमूक्तनिःसंस्त्यदवित्वदीयं मुखं पूरुन्दानूकाविरूद्रद्विष्टमा
 निष्कसत्कुपुलाद्युष्टगुल्लं ४ यः ३ पितृदादृष्टं च नृगिपाणिर्जुजावर्द्धपादां गुलेस्तपित्वनामम
 र्हनादविमूक्तनिःस्थात्रैर्महाद्याधिरिः ४ संस्त्यपादात्रविन्ददयंतमहाकालिकालाप्रितजः ४ परं
 सुन्दवक्त्रं दुष्टदार्क्यपूषायूधैर्मौलिमालालिसत्यमर्कजत्कसत्या ३ ३ ३ ३ सर्ववीराम्बिकरुं प्रवी
 रूगवलागताहं कमस्वापवाधं कमस्वापवाधं गितं ॥ ३ ३ ३ ३ मुत्तामहादविर् रवतमहात्मनातता

रुनव

ने ४

व ३

लिर्भविनिर्भय निर्भताय नमः श्रवा ॥ ॥ इति मालिनीदण्डककार्त्तसमाप्तः ॥ अथ यश्च
लिविय ॥ ददुसपाठ अथ लिखितवर्णलिपिविय ॥ मयूनासनाय पादुका ॥ वं अखुं धौ कौ कल
पूववदकनाथाय पादुका ॥ वलिः ॥ वं अखुं धौ कौ दवी पूववदकनाथ कपिलजगता वरासु वलि
नरुका लामुख अवनत व २ अक्षरि रुगवन मलुल म (धाय) थाय नीर्त वलिं गृह्ण २ वाश्चि तार्थ दद
स्वमं ३ रुट् स्वाहा ॥ इति वदकवलिः ॥ नवा सनाय पादुका ॥ वं अखुं धौ (धौ) धौ प्रम वदीय दसु
कीदवी महाधौ ककु पा लाय पादुका ॥ वलिः ॥ वं अखुं इति वदकना धियतय यथानाम् अवनत व
२ मलुल म (धाय) अवनत व २ वरुं रुज विन रुका यख द्वा ३ रुट् क गूल पा लय महा क पा ल माला रु व
नाय वियुक्ता टिस मय रु अक्षरि रुगवन रु व वरुं य ल य (थाय) यन्नाना वलिं गृह्ण २ मम विद्वान्
कादय धौ कौ रुट् स्वाहा ॥ इति वदकवलिः ॥ सिंहासनाय नमः ॥ नवा सनाय पादुका ॥ वं अखुं
धौ यागिनीयाय पादुका ॥ वलिः ॥ वं अखुं यक विद्यागिनीनां पी ० जा क्क यजा सह जा गजा गर्जु जा क्क

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

येवर्णकालीतापिनीतथा ॥ यमद्यथागिवाहूतीकृत्याकृत्यमध्वरी ॥ वलिनेवयस्यगृह्णमयारु
ह्यानित्याजितास्वाहा ॥ आवाहनादि ॥ यानिमूर्धा ॥ जायते ॥ शुंस्वाहा ॥ १० ॥ आहु ॥ यद्ययताधिवृष्टी
सुटिकमलिनिरुंयश्चक्राद्विनर्गोलाकृमाहयनीकुंजदणकयूतादिद्यवस्वावृतामींवा
भकापालगुलंयटववदमहापाणमूर्धुवरुनीयथायदाभस्वश्रुयगृह्णिप्रदितंमिदिल
क्षान्नमामि ॥ अथगन्धादि ॥ न्तिकमुपूजा ॥ ॥ अथपश्चिमयगुलियाय ॥ थलुलिस ॥ थतयाव
लिथलुलियाजवलाहथकादूवालाकवलिस ॥ थलुलिस्यपूजनं ॥ ॥ विगत्तनायम ॥ जांआत्म
नत्वायस्वाहा ॥ जीविशानत्वायस्वाहा ॥ दूगिवत्तत्वायस्वाहा ॥ ॥ युवनमस्काव ॥ उंजींजींजींको ॥ अ
खण्डमण्डलाकारंवाफंथनयवायवरीगत्यदंदिर्गितंथनगस्मिणीयुवनम ॥ उंअथनमयुवस्या
नम ॥ अयनम ॥ अयनम ॥ अयनम ॥ अयनम ॥ ॥ यन्मासनायनम ॥ कूर्मासनाय
नम ॥ किलिशिविकाकीर्णायैक ॥ अस्त्रायरुद्र ॥ उंद्रुद्रवज्रयश्चस्वाहा ॥ यलमकलंकूलमय

लज्जीकुरुत्वाहा ॥ अथ न्यासः ॥ किलिश्चिक्का कनायेकः ॥ अस्त्राय रुट्पादका ॥ ४ ॥ कत्र
गाधन ॥ नमारुगवतिदत्तमलायेकां धीर्गुणाय नमः ॥ कुंकुटिकाये कूलदीपाये कोष्ठात
र्जनीयानमः ॥ कांजीकुरुवर्चत्रिगिर्याये कृष्णामध्यामाय नमः ॥ ध्यात्रा अद्यात्रा अद्यात्रा मुखीवद्व
पाये कोष्ठा अनामिकायानमः ॥ कांकां मरुकाविकाये कोष्ठा कनिष्ठाय नमः ॥ किलिश्चिक्का कीः
नायेकः ॥ अस्त्राय रुट्पादका कत्र नववृक्षायां पादका ॥ इति कर्तव्यं न्यासः ॥ नमारुगवतिदत्तमलाये
कादुर्ध्ववकायपादका ॥ कुंकुटिकाये कूलदीपाये धीपूव्ववकायपादका ॥ कांजीकुरुवर्चत्रिगिर्या
यादक्षिणवकायपादका ॥ ध्यात्रा अद्यात्रा अद्यात्रा मुखीवद्वपाये धीधरुवकायपादका ॥ कां
कां मरुकाविकाये धीपश्चिमवकायपादका ॥ किलिश्चिक्का कलाये धीपत्रापत्रवकायपादका
॥ इति वक्तव्यं न्यासः ॥ नमारुगवतिदत्तमलाये कांदुदयाय नमः ॥ कुंकुटिकाये कूलदीपाः
ये कोणित्रसंस्वाहा ॥ कांजीकुरुवर्चत्रिगिर्याये कृष्णाय नमः ॥ ध्यात्रा अद्यात्रा अद्यात्रा मुखीवद्व

नूपायैककववायदू ॥ **ॐ** मरुतात्रिकायैकोनवववायववव ॥ किलिशविद्यकाकलायै
 क४अस्वायरुट् ॥ **ॐ** तिम्रमन्त्राय४ ॥ जलपाययूजा ॥ जलपायासनायपादुका ॥ **ॐ** अस्वा
 नन्दगकिरेववानन्दवीवाधियतययू ॥ **ॐ** जलपाययूजात्रिकायपादुका ॥ **ॐ** ददयाय
 यादि ॥ **ॐ** वाहनादि ॥ **ॐ** नूमूर्धा ॥ ग ॥ ययी ॥ अरुविअर्न ॥ **ॐ** कद्रिकायविद्यरु कुलदीयूपा
 यधामहिरनाकुद्रियवादयात ॥ ॥ **ॐ** अथअर्धपाययूजा ॥ अर्धपायासनायपादुका ॥ **ॐ** अ
 द्वा ॥ **ॐ** क४प्रसूत्रशतवसनूपयैठ२यवठ२करु२वम२दम२द्यातय२विद्यातय२विद्यी२दू३
 रुट् ॥ **ॐ** अमहाकोमात्रिकाविद्यपादुका ॥ **ॐ** अस्वा ॥ **ॐ** नन्दगकिरेववानन्दवीमहाविद्यावाजयन्त्र
 या ॥ **ॐ** अर्धपाययूजात्रिकायपादुका ॥ **ॐ** ददयाय ॥ **ॐ** वाहनादि ॥ **ॐ** निमूर्धादर्गयत्
 ॥ ॥ **ॐ** रुगुद्रि४ ॥ कद्रयमूर्धावद्धा ॥ **ॐ** अमहा ॥ **ॐ** कोकोकोकोको ॥ **ॐ** अस्मयूजा ॥ **ॐ** वन्दन
 पादुका ॥ **ॐ** अमूर्धनपादुका ॥ **ॐ** वात्ररुसपादुका ॥ **ॐ** सर्वजनमारुनापादुका ॥ **ॐ** नानाकुशाली

[illegible]

४ जंअरंलेआनन्दनकिरेववानन्दवीशधियनयसंख्यादूकी॥३

[illegible]

नमो भगवते ॥ १ ॥ खवर्णपूर्ववकुलु दक्षिण कृष्ण गार्गितं ॥ २ ॥ उरुवपीतवर्णस्य कृष्णवर्णकवर्णितं
॥ ३ ॥ वक्रस्य दक्षिण धूमं ॥ घनमूलवर्मवयं ॥ तद्वर्णपीतवर्णस्य कृष्णवर्णकवर्णितं ॥ ४ ॥ वक्रमू
लवर्मितस्य कृष्णवर्णस्य ॥ घनमूलमं ॥ अक्षयगुरुजं दवं ॥ कवन्धरावरुषितं ॥ ५ ॥ खड्गुरुटकधनन्द
वं ॥ विमूलमं कर्णगथा ॥ मूर्धकमण्डल ॥ अष्टं ॥ उमवस्वदा समवयं ॥ ६ ॥ वानप्रधनवायुकां पत्रपुष्प
गुण ॥ गार्गितं ॥ वक्रं वेवगदाया ॥ विवदरुयहस्रकं ॥ ७ ॥ कायविन्दधनं दवं ॥ नानालंकावरुषितं ॥
नवपीतं रुवद्वर्णं ॥ मायनस्य संहितं ॥ ८ ॥ उर्वरूपं नवात्मानं ॥ मण्डलं उरुमण्डलं ॥ ध्यायं यमुषय
कात्मा ॥ द्विषं सिद्धिनिमानवा ॥ ९ ॥ इति ध्यानं ॥ ॥ अक्षुं आनन्दगकिरुववानन्दवीनाधिपतयं ॥
धीनवात्मानन्दनाथी ॥ उरुमण्डलरुदाविकायेया ॥ दुर्का ॥ १ ॥ अक्षुं आनन्दगकिरुववानन्द
शीमहाविद्याया अक्षुं धीनवात्मा ॥ उरुमण्डलरु ॥ द्वाविका ॥ येयादुर्का ॥ धननवल्लि ॥
गणपूजा ॥ अक्षुं डामहा ॥ पूजा ॥ उरुमण्डलया कृद्विकायेयादुर्का ॥ ॥ त्रिकालमध्या ॥ अक्षुं उमहापूजा

पुत्रमपुलघागस्त्रायैपादुकां ॥ त्रिकालदक्ष ॥ अहं यत्रमपिपुत्रमपुलघादद्यायेपादुकां ॥
 त्रिकालवामे ॥ अहं यत्रमपुत्रमपुलघाह्नायैपादुकां ॥ त्रिकालाय ॥ अहं अपुत्रमपुलघा
 आह्नायैपादुकां ॥ यत्रायत्र ॥ अथानिवृत्तयुत्रमपुलघायैपादुकां ॥ बहुत्रयमपुलघुर्व
 याविश्यात्तत्रयुत्रमपुलघायैपादुकां ॥ दक्षिणे ॥ अथआत्मतत्रयुत्रमपुलघायैपा
 दुकां ॥ पश्चिमे ॥ अथआह्नाकसूमायैपादुकां ॥ उरुत्र ॥ अथयैपादुकां ॥ अथयै ॥ अथविजयाय
 पादुकां ॥ नैमह्य ॥ अथअजितायैपादुकां ॥ वायव्य ॥ अथअपत्राजितायैपादुकां ॥ श्रीगान् ॥ इति
 पुत्रयमपुलघुजा ॥ अथहं गान्तामीतायैपादुकां ॥ त्रिकालमध्या ॥ तदाकत्रपुत्रयमपुलघुज
 यत् ॥ अथयंगान्तायैपादुकां ॥ पश्चिम ॥ अथवैश्यायैपादुकां ॥ उरुत्र ॥ अथवैपतिष्ठायैपादुकां ॥ द
 क्षिणे ॥ अथलंनिवृत्तयैपादुकां ॥ पुर्व ॥ अथकूलरुत्रयैपादुकां ॥ वायव्य ॥ अथकूलनाथरुत्रयैपादु
 कां ॥ श्रीगान् ॥ अथकूलरुत्रयैपादुकां ॥ अथयै ॥ अथकूलकपाठरुत्रयैपादुकां ॥

[illegible]

किलिश्चिद्वयादुर्का ॥ आवाहनादि ॥ धनमूर्धादङ्गयत् ॥ धनतर्तवलिः ॥ वलिः ॥ समस्तमन्त्रया
विर्षिरासनया ॥ १० ॥ गणयया विष्णवायकवसंदाहायसंदाहद्विद्यसिद्धिसमयत्रकपादुर्का ॥
अडकानुर्कायकिंविहसर्वत्रंथादुदयाययादुर्का ॥ वलिः ॥ १२ ॥ अष्टांगमन्त्राद्यनवात्मायुन
मण्डलरुद्रात्रकायः ॥ नवयंष्टका ॥ १३ ॥ अतिशयकं वलिः ॥ ॥ आवाहनादि ॥ धन
यानिमूर्धा ॥ विन्दुत्रिय ॥ ३ ॥ ॥ अतिशयानवात्मायुनमण्डलयुजाविधिः ॥ ॥ अष्टांगमन्त्राद्यनवात्मायया
दुर्का ॥ अष्टांगमन्त्राद्यनवात्माययादुर्का ॥ वलिः ॥ ॥ अष्टांगमन्त्राद्यनवात्माययादुर्का ॥ अष्टांगमन्त्राद्यनवात्माययादुर्का ॥
विका ॥ अष्टांगमन्त्राद्यनवात्माययादुर्का ॥ वलिः ॥ ॥ अष्टांगमन्त्राद्यनवात्माययादुर्का ॥ अष्टांगमन्त्राद्यनवात्माययादुर्का ॥
किरु ॥ अष्टांगमन्त्राद्यनवात्माययादुर्का ॥ वलिः ॥ ॥ अष्टांगमन्त्राद्यनवात्माययादुर्का ॥ अष्टांगमन्त्राद्यनवात्माययादुर्का ॥
सासनाययादुर्का ॥ अष्टांगमन्त्राद्यनवात्माययादुर्का ॥ वलिः ॥ ॥ अष्टांगमन्त्राद्यनवात्माययादुर्का ॥ अष्टांगमन्त्राद्यनवात्माययादुर्का ॥
नाय ॥ अष्टांगमन्त्राद्यनवात्माययादुर्का ॥ वलिः ॥ ॥ अष्टांगमन्त्राद्यनवात्माययादुर्का ॥ अष्टांगमन्त्राद्यनवात्माययादुर्का ॥

दृषात् सिंहात् २

[illegible]

नाथनमः॥ अवक्रममुलाधियतयं श्रीश्वरधतासनाथनमः॥ अमकिममुलाधियतयं सदागि
वधतासनाथनमः॥ वृषासनाथपादुकां॥ सिंहसनाथनमः॥ अथध्यानं॥ अवृषरुपं हितं दवं
खवर्धुं नूप (गारितं) एकवर्कं विनयं ॥ रुजासादगधविनी ॥ १ ॥ उमनूपवर्धुं वार्णं खड्गमकु
णवकुर्कं ॥ र्णखं ववीनवाय ॥ ववर्धाववदक्षि ॥ २ ॥ वामखद्वान्मूल ॥ धनूरुलकपागर्क
धर्मां कपालवन ॥ मूरुयारुयनागर्न ॥ ३ ॥ घटनवद्विताजान् वामानूस्ववदवति ॥ एकवर्क
विनया ॥ मूरुनावर्धुवर्धिता ॥ ४ ॥ द्विरुजाववदादक्ष सिंहसु रुयसद्यसू ॥ नानारुवरासासाया
सलक्षल ॥ लक्षल ॥ ५ ॥ र्णववानन्दनूपायं अष्टानअष्टपकीर्तिनी ॥ एवंध्यात्वा महादवं क्रियेसि
द्विकमानव ॥ ६ ॥ अतिध्यानं ॥ ॥ अमयात्रकाथर्धात्रकाथत्रयात्रनत्रं ॥ सर्वतः सर्वसर्वद्विर्
सः ॥ कोनूदनूपदः ॥ पादुकां ॥ अववर्जकविनी ॥ उलाव्याकर्षणादीकामान्द्रावणी ॥ कोम्रीमहाका
रुकाविनी ॥ उमोमः ॥ पादुकां ॥ अथजयादवापादुकां ॥ अथविजयादवापादुकां ॥ अथीमूर्जिताद

वीयादुर्का ॥ श्रीअथनाजितादवीयादुर्का ॥ अथीजमुनीदवीयादुर्का ॥ अथीसंरुनीदवीयादुर्का ॥ अ
 थामाहनीदवीयादुर्का ॥ अथीआकर्षणादवीयादुर्का ॥ अनमारुगवतिदुर्का ॥ कृत्रिकायेकांकीं दूधान
 अथानाअथानामुखीकांकीं किलिशविद्ययादुर्का ॥ अनमारुगवतिदुर्का ॥ कृत्रिकायेकांकीं दूधान
 नमअथानामुखीकांकीं किलिशविद्ययादुर्का ॥ अरुगवतिसिद्धकांकीं दूधान ॥ कृत्रिकायेकांकीं दूधान ॥ ग
 अथानाअथानामुखीकांकीं किलिशविद्ययादुर्का ॥ धतनैवल्लि ॥ ३॥ अथीआनन्दन किलिश
 वानन्दवीनाधियतथम ॥ अथीपश्चिममूलस्तानरुद्यानकाययादुर्का ॥ ३॥ अथीआनन्दन किलिश
 रुत्रवानन्दनीमहावि ॥ अथीआनन्दनीमहावि ॥ अथीमूलस्तानरुद्यानकाययादुर्का ॥ ३॥ अथीआनन्दन किलिश
 दयायथादि ॥ मूलम ॥ अथीमूलस्तानरुद्यानकाययादुर्का ॥ ३॥ अथीआनन्दन किलिश
 कृत्रिकायेकांकीं दूधान ॥ अथीमूलस्तानरुद्यानकाययादुर्का ॥ ३॥ अथीआनन्दन किलिश
 अथीदुर्कायेकांकीं दूधान ॥ अथीमूलस्तानरुद्यानकाययादुर्का ॥ ३॥ अथीआनन्दन किलिश
 अथीदुर्कायेकांकीं दूधान ॥ अथीमूलस्तानरुद्यानकाययादुर्का ॥ ३॥ अथीआनन्दन किलिश

आइवालाक २

मदयुलिसमायुः॥ अथजयकुम्भध्वनीदयुलियाय॥ पूजनधुलिस॥ धुलिलिजवलालि
थपाटवलिस॥ न्यामः॥ ॐ अं क्रीं अस्त्रायरुह॥ ४॥ कवलाधनं॥ क्रीं कनिषायनमः॥ क्रीं अनामि
कायस्त्राह॥ क्रीं मध्वमायवासरु॥ क्रीं तर्जुनायेकं॥ क्रीं अंगुष्ठायवसरु॥ क्रीं अस्त्रायरुह॥ तनम
नुनअस्त्रायः॥ जलार्घपात्ररुतपुद्रिमात्मयुजार्क॥ आवाहनधोमवर्त्तन॥ विद्वत्सामन
पूजनवलिस॥ मूर्धा॥ ॥ ह्रीं सासनायनमः॥ वृषासनायनमः॥ मयूनासनायनमः॥ गरुडासना
यनमः॥ महिषासनायनमः॥ गजासनायनमः॥ अनासनायनमः॥ नवासनायनमः॥ ॐ अं
क्रीं अमिताभरुत्रवायपादुकां पूजयामि॥ क्रीं वरुणरुत्रवायपादुकां॥ क्रीं वज्ररुत्रवायपादुकां
॥ क्रीं काशरुत्रवायनमः॥ क्रीं उग्ररुत्रवायपादुकां॥ क्रीं कपालिसरुत्रवायपादुकां॥ क्रीं रु
द्ररुत्रवायपादुकां॥ क्रीं संहाररुत्रवायपादुकां॥ ॐ अं गीन्द्रवज्रादवीपादुकां॥ गीन्द्रवज्रा
दवीपादुकां॥ गीन्द्रवज्रायदवीपादुकां॥ गीन्द्रवज्रायिकादवीपादुकां॥ गीन्द्रवज्रादवीपादुकां॥ गी

यउवलेदवीपादूकां॥याउवूयादवीपादूकां॥यीअतिवप्रिकादवीपादूकां॥उंगअवद्वाय
लादवीपादूकां॥कंमाहृग्रीदवीपादूकां॥वंकीमावीदवीपादूकां॥टंवेकूवीदवीपादूकां॥नं
वावाहीदवीपादूकां॥यंरूद्रायगादवीपादूकां॥यंवाप्रुतादवीपादूकां॥गंमहालक्ष्मीदवीपादू
कांमूजयामि॥ध्वतनंवल्लि॥आध्वतनंकथनम॥अनन्यतनम॥कंदासनायनम॥धे
नासनायनम॥नानासनायनम॥कंलनासनायनम॥कर्तुकासनायनम॥यद्वामनायन
म॥सिंहासनायपादूकां॥अथध्यानं॥उंगअवद्वायगुजादवीपीनवकसुनायनम॥कपालंरुट
कंयगांयनंनर्जनायनं॥१॥ध्वजंमन्त्रयाग॥वामहस्तंविद्यति॥स्वर्गंकिंनवंयमसूकं
नंवज्जलीयलं॥२॥गतासलाकयायकंदधनादक्षि॥लकनं॥सूर्यकाटिपटीकागंनानारुवंग
विता॥३॥सिंहमावूठमसूर्यं॥सर्वकर्मरुलपदं॥हावकयूत्रकटका॥कित्रीठिमूकठाकला॥४॥सच्चा
रुद्रसंयूका॥सर्वदवनमस्तुता॥उर्वध्यात्वामहादवीं॥रूपिगार्थरुलपदी॥५॥रूतिध्यानं॥दिया

आत्मयूजा॥ आवाहन श्रीसर्वकर्त॥ त्रिदश आसनयूजनवल्लि॥ मूर्धा॥ ॥ हंसासनासनम॥ वृ
षासनासनम॥ मयूरासनासनम॥ गरुडासनासनम॥ महिषासनासनम॥ गजासनासन
म॥ खतासनासनम॥ नवासनासनम॥ उं॥ जां अगिता मरुं ववायपादुकां॥ जां वृं वृं ववा
यपादुकां॥ जां वृं वृं ववायपादुकां॥ जां काधरुं ववायपादुकां॥ जां डल्लरुं ववायपादुकां॥
जां कपालि मरुं ववायपादुकां॥ जां रीषनरुं ववायपादुकां॥ जां संहारुं ववायपादुकां॥ वलि
॥ जां रुं रुं रुं ववायपादुकां॥ जां रिपूनाक रुं ववायपादुकां॥ जां अग्निवताल रुं ववायपा
दुकां॥ जां अग्निजिह्वारुं ववायपादुकां॥ जां काला रुं ववायपादुकां॥ जां कबालिन रुं ववायपा
दुकां॥ जां वृं कपाद रुं ववायपादुकां॥ जां रीमवृय रुं ववायपादुकां॥ जां गगल रुं ववायपादु
कां॥ श्वतर्नवल्लि॥ आक्षत्रगकथनम॥ अन्नकासनासनम॥ कन्दासनासनम॥ नावासनासन
नम॥ यगासनासनम॥ कणवासनासनम॥ कर्णिकासनासनम॥ यन्त्रासनासनम॥ उं॥ यता

उं॥ हतकरुं ववायनम॥ ३

[illegible]

खड्गमूर्धा॥ विन्दुत्रयं॥३॥ ॥ॐतिनिखामहाकालदयुलिसमाधः॥ ॥अथक्षुण्णपालदयुलिया
य॥यूजनथलुलिस॥थलुलियाखवलाद्धथ्याटमहाकवालाकस॥वलिस्॥आसः॥कःमहा
याद्युयताश्रायद्वैरुट॥४॥कत्रलाधन॥अद्यावज्जोअमुखास्यानमः॥थद्यावज्जोतर्जनीस्यानमः॥
द्यावद्यावकत्रद्वैरुमभ्यामास्यानमः॥सर्वतःसर्वसर्वज्जोअनामिकास्यानमः॥शंसः॥कोवूदवूय
कनिष्ठास्यानमः॥कःमहायाद्युयताश्रायद्वैरुटकत्रतलपृष्ठास्यानमः॥कत्रन्यासः॥अद्यावज्जो
द्वदयायनमः॥थद्यावज्जोनित्रसखाहा॥द्यावद्यावकत्रद्वैरुनिखायेवषट्॥सर्वतःसर्वसर्वज्जो
कत्रयायद्वै॥शंसः॥कोवूदवूयनतुदयायवोषट्॥कःमहायाद्युयताश्रायद्वैरुट॥ॐस्व॥मंयास
जलपाणयूजा॥मूलन॥गभयनी॥

मूलनअर्घपाणयूजा॥रुतुद्रि॥आत्मयूजा॥आवाहनधीसर्वर्त्तन॥विदवआसनयूजनवलि
मूर्धा॥॥हंसासनायनमः॥वृषासनायनमः॥मयूनासनायनमः॥गवूनासनायनमः॥महिषाः

सनायनमः॥ गजा सनायनमः॥ यता सनायनमः॥ नवा सनायनमः॥ जां प्रयागं कृष्णालाय
पादुकां॥ जां वागसी कृष्णालाय पादुकां॥ जां काला पुर कृष्णालाय पादुकां॥ जां मूढ हार कृष्ण
कृष्णालाय पादुकां॥ जां जयन्ति पुर कृष्णालाय पादुकां॥ जां वरिष्ठ कृष्णालाय पादुकां॥ जां व
कास कृष्णालाय पादुकां॥ जां दवी काठ कृष्णालायनमः॥ धन नवल्लिः॥ जां रुद्र कृष्णालाय
पादुकां॥ जां गिरि पुरान कृष्णालाय पादुकां॥ जां अश्वि वताल कृष्णालाय पादुकां॥ जां अ
ग्नि जिह्वा कृष्णालाय पादुकां॥ जां कंकाल कृष्णालाय पादुकां॥ जां कलाल कृष्णालाय पादुकां॥
जां कपाल कृष्णालाय पादुकां॥ जां एक पाद कृष्णालाय पादुकां॥ जां हाट कृष्णालाय पादु
कां॥ जां मूत्र ल कृष्णालाय पादुकां॥ धन नवल्लिः॥ अं॥ (जां) कठारु दीप दमू की दवी क्षी कृष्णालाय
पादुकां॥ जां अग्नि ता मूरु ववाय पादुकां॥ जां वृत्रु ववाय पादुकां॥ जां वृत्रु ववाय पादुकां॥
जां काठ रु ववायनमः॥ जां डमरु रु ववायनमः॥ जां कपाली गरु ववाय पादुकां॥ जां रीष गरु

[illegible]

पुलाकावेः कथूनेर्मलिनूयनेः वत्तमालाविचित्रेष्टुहात्रमालावलम्बिते ॥ २ ॥ अष्टादशशुभाकाः
कापीनवक्रसुन्दरहासर्वालकात्रसंयुक्तागठिकाटिममयका ॥ ३ ॥ खड्गत्रसुधावर्कवहाक
नधवाधुकावेनठंदमवृहासात्र गूलपाणसूणाहिता ॥ ४ ॥ दक्षिणनकवाचनायथासांकात
थापर्वः रुटर्कधनूरुसात्रगदायष्टासूणाहिता ॥ ५ ॥ पाणश्चतर्जनीरुसाखदासकंनपाणकं
विदुमूडातथासिंधुसिंहासनपत्रिहिता ॥ ६ ॥ अधस्त्रिगणित्रिधुनर्महियंश्चमहासूत्रं तद्दीवा
त्रिर्जतादेष्यमहावलपवाकर्म ॥ ७ ॥ रुदयिंस्त्रिगूलनविधुतायात्रिवावृहाचर्वश्चात्तामहाद
वीसर्वकामरुलपदा ॥ ८ ॥ ॥ लघाषाठगरुसात्रखदाश्चमर्वविनाचूडयप्रोयप्रोयत्रत्रो
यात्रप्रुनायिका ॥ ९ ॥ यत्रोयप्रुवतीयेवत्रप्रुवृपातिवप्रुकारवायनाकावृणाकृष्णनीलाष्टकात्र
धूमिका ॥ १० ॥ पीताश्रयाप्रुवाक्षयाश्रालीरुसाह्रिहितास्वपत्रिवात्रसमायुक्ताश्रयांतमिरुमप्रुल
॥ इतिश्रानं ॥ अंजनमष्टौकां प्रुवाययेनमष्टौकां पादूकां ॥ वलिः ॥ श्रियाश्चलिः ॥ अंजुंकांवाज

यदं कुं डयव (पु) त्रिपु मर्दनी कुं कुं सदा नक्ष २ त्वां मां शं स ४ मृत्पूरु नया दूकां । वलि ४ । उं जं उं डी वा
 ऊ यदं कुं डयव (पु) त्रिपु मर्दनी कुं कुं सदा नक्ष २ त्वां मां शं स ४ मृत्पूरु नया दूकां । ३ । वलि ४ । ददया
 यथा ॐ दि । गायत्री । वलि ४ । ॐ द्यादिपूजा । उं जं न्मूलं ॐ द्याय वज्र रुक्माय सूत्राधिप तय पा
 दूकां । ॐ नू नू न अ न कि रुक्माय तजाधिप तय पादूकां । ॐ मू मू य मा य द पुरु रुक्माय यताधिप
 तय ॐ पादूकां । ॐ दू नू न अ य र व रुक्माय वा रुक्माधिप ॐ तय पादूकां । ॐ वू वू नू ला य पा
 न रुक्माय जलाधिप ॐ तय पादूकां । ॐ यू यू वा य या य ध्वज रुक्माय पवनाधिप त ॐ य पादूकां । ॐ
 सू कू व वा य ग दा रुक्माय धनाधिप त ॐ य पादूकां । ॐ दू ॐ नू ना ना य ति मूल रुक्माय रुताधिप ॐ
 तय पादूकां । ॐ मू नू नू ना य व रुक्माय नागधिप त ॐ य पादूकां । उं जं उं वृक्ष (पु) त्रिपु मर्दनी कुं कुं सदा नक्ष २ त्वां मां शं स ४ मृत्पूरु नया दूकां ।
 ॐ धिप तय पादूकां । ॐ तं न वलि ४ । ॐ जयादिपूजा । उं जं कुं जया ये पादूकां । ॐ विजया ये पादूकां
 । ॐ अजिता ये पादूकां । ॐ अय वाजिता ये पादूकां । ॐ ऊ रुना पादूकां । ॐ तं रुना पादूकां ।

[illegible]

सदा नमः शिवाय ॥ मृदुलं वदन्तं ॥ बलिः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सदा नमः शिवाय ॥ मृदुलं वदन्तं ॥ बलिः ॥ ३ ॥ दद्यात्तु यथा ॥ दि ॥ गभयंती ॥ बलिः ॥
खड्गकृतिस ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ गध्वनी महावल पत्राक्रमं ॥ गध्वनी महावल पत्राक्रमं ॥
वदनी स्वराय कवीदायनी रुगवति वदन्तं ॥ स्वाहा ॥ खड्गमध्यास ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
हनी रुगवती नमः स्वाहा ॥ खड्गमध्यास ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
मः स्वाहा ॥ आचारुनादि ॥ यानिमूढा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
खवलाहूथ्यात महाकुवालाक वलिस ॥ वदन्तं वदन्तं ॥ १ ॥ यदन्तामहं नमो
यकवकला नवरुलकयाजव ॥ २ ॥ वदन्तामहं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
खव ॥ ३ ॥ वदन्तामहं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥ वदन्तामहं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
वदन्तामहं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥ वदन्तामहं नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सत्रकूलि डयवलायालिवनयूर्व ॥ १ ॥ अतिवलि कामहालकां डयवलासलिवनयधिम ॥
 ॥ पूजा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ विष्णु याये पादकां ॥ ॐ अजिताये पादकां ॥ ॐ अयनाजि
 ताये पादकां ॥ ॐ अरुनी पादकां ॥ ॐ अरुनी पादकां ॥ ॐ माहनी पादकां ॥ ॐ अयनाजि
 कर्षणी पादकां ॥ ॐ अतर्नवलि ॥ ॐ अमरवदवलावका यनी पादकां पूजयामि ॥
 ॐ श्रीवला माहनी पादकां ॥ ॐ डडवला यकोमा नी पादकां ॥ ॐ अमवला यिका वी पादकां
 ॥ ॐ अवा नी पादकां ॥ ॐ अवा नी पादकां ॥ ॐ अवा नी पादकां ॥ ॐ अवा नी पादकां ॥ ॐ अवा नी पादकां ॥
 ॐ अतिवलि कामहालकां पादकां पूजयामि ॥ ॐ अतर्नवलि ॥ ॐ अंको वा जयददया यनम
 ॥ ॐ डयवला निवसंवाहा ॥ ॐ विपमर्दनी निखायवाय ॥ ॐ अंको वा जयददया यनम
 ॐ अतिवलि कामहालकां पादकां पूजयामि ॥ ॐ अतर्नवलि ॥ ॐ अंको वा जयददया यनम
 ॐ अतिवलि कामहालकां पादकां पूजयामि ॥ ॐ अतर्नवलि ॥ ॐ अंको वा जयददया यनम
 ॐ अतिवलि कामहालकां पादकां पूजयामि ॥ ॐ अतर्नवलि ॥ ॐ अंको वा जयददया यनम

[illegible]

[illegible]

दं दर्शनं यत्नं तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥ गुरुर्वक्त्रा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्वद्वयमरुत्तमः॥ गुरुर्वद्वयजगत्सर्वं तस्मै
 श्रीगुरुवे नमः॥ उंज यत्र मयुर्वृक्षानमः॥ उंज यत्र मयिष्युर्वृक्षानमः॥ उंज यत्र मात्रायुर्वृक्षान
 मः॥ उंज यत्रासनाय पादकां॥ वलिः॥ उंज कूर्मासनाय पादकां॥ थवज्जासनतय॥ पा॥ श्रीगुरुवे
 नमः॥ उंज शंखं सकललक्षणमथ निभूतनक्तगकि धाम्नं गुरुय रुद्रपादकां॥ वज्रमूढायाम्
 खवद्वर्तनं॥ उंज शंखं दूरं रुद्रवद्वर्तनं॥ दलदात्रस्यर्जनं॥ उंज शंखं बलमकलकलमवलज्जो
 दूरं रुद्रस्वाहा॥ ॥ अथ न्यासः॥ शंखं सकललक्षणमथ निभूतनक्तगकि धाम्नं गुरुय रुद्र॥ ४॥ कत्राणाधनं॥
 शंखं यत्र मर्हसिनी सर्वज्ञाता गकि धाम्नं गुरुय रुद्रां नमः॥ शंखं निर्वाणमार्जय रुद्रकि धाम्नं गुरुय रुद्रां नमः॥
 मः॥ शंखं विषमायस्य वयस्य मनिभूतादिवाधनकि धाम्नं मथ्यमास्यां नमः॥ शंखं सकलदूत्रिताविषकल
 दलनिखतनक्तगकि धाम्नं गुरुय रुद्रां नमः॥ शंखं सर्वायदासुधितत्रलिभूलफलकि धाम्नं कनिषास्यां
 नमः॥ शंखं सकललक्षणमथ निभूतनक्तगकि धाम्नं गुरुय रुद्रां नमः॥ इति कर्तव्यं॥

खूं नमः सर्वसिद्धिगिनी ॥ सर्ववक्त्रनाथपादुकां ॥ खूं नमः सर्वसिद्धिमाहृषादक्षिणवक्त्र
 नाथपादुकां ॥ खूं नमः निष्पादिता नन्दन निदिताये डल वक्त्रनाथपादुकां ॥ खूं सकलकूलवक्त्र
 नाथिकाये पश्चिमवक्त्रनाथपादुकां ॥ खूं रुगवत्येवमुक्तायाति न्यो दुर्ध्ववक्त्रनाथपादुकां ॥ ॐ
 तिवर्कन्यासः ॥ ॥ तं रुमध्या ॥ शं ददय ॥ धा नारो ॥ ॐ तिदहं न्यासः ॥ ॥ ॐ मख ॥ ॐ वामनासा
 यट ॥ ॐ दक्षनासायट ॥ ॐ वामनय ॥ ॐ दक्षनय ॥ ॐ वामक ॥ ॐ ॐ दक्षक ॥ ॐ नलि ॥ मः
 मुठ ॥ ॐ तिनवदार्पणन्यासः ॥ ॥ खूं यत्र महं सिनी सर्वरुतां ददयाय नमः ॥ खूं निर्वलिमार्जदगृफि
 गकिधाम्ननिवसखाहा ॥ खूं विषमाय हवयगमनी अनादिवाधगकिधाम्ननिखाये वषट् ॥ खूं स
 कलदूत्रिता विष्णुगण दलनिखननुगकिधाम्नकवचाय हूं ॥ खूं सर्वापदाभ्रधित वलिअलूफण
 किधाम्ननदययाय वीषट् ॥ खूं सकलगण प्रमथनिअनकगकिधाम्नअस्त्राय रुट् ॥ ॐ तिअन
 न्यासः ॥ ॥ दवीअगच्छ ॥ दद्या ॥ साकात्राया ॥ आक्षान्तस्वगवीर्गर्तवाक्कगर्तवविदिन्या ॥ हस ॥

गकिधाम्न ३

स्वात्मनि नूनं यदप्यत्र विविक्तं । वन्न २१ फना कार्यं विविक्तं । नत्र नृधिवा नृवसा रुक्मनी रुक्मवि
विक्तं । मम स्वर्ग फनमर्द २ खादि २ वाम रुक्म स्वर्ग म विविक्तं । विष्णु लला रितु २ दक्षिण पा । ध्वनिष्णु
ल विविक्तं । विष्णु २ स्वर्ग दक्षिण पा । ध्वनि विविक्तं । ता उय २ वाम पा । ध्वनि विविक्तं । कुदय २ द
क्षिण पा । ध्वनि विविक्तं । ता वया यत्न मम कल मना नथान सा धय २ दक्षिण वत्र रुक्म विविक्तं
। यत्र मका नृलिकं वाम पा । ध्वनि रुक्म विविक्तं । रुगवती मरुते नृव नृय धा त्रिणा वाम रुक्म मूर्त
विविक्तं । विदग वन मित सकल मनु मात ४ वाम रुक्म कल ल विविक्तं । वृत्तिकला यध दग क
या स ४ । । यल तज न वत्त नृध ४ गवा स नृय न विविक्तं । वृत्ति आ स नृया स ४ । । दवा म हा का
ली काल ना गनी मृना रुत ना दं मृ मूला या ४ कुन्दल नी वृया आ ४ दवा ४ विक्त न । कुंद दया दिन्द
यार्क । कुं विन्दु स्ताना दृक् नृध यार्क । यशी दम दना नृवा जी कु २ सूना सूत्र कर्तु का मृन
न विष्णु वगी का नृया थार्क मूर्त विविक्त यत् । जी आ धा व । यो लि । ग । कुं ना री । रुद्र दय । रुद्र क ।

॥ स्वाविन्दुस्तन ॥ हावकर्म ॥ ॐ ति मधुना तिस्रवर्जुन वर्याधिक सत दया कर्म लया य ॥ ॐ ति
मालामर्तुना य ॥ ॥ अथ जलपात्र पूजा ॥ ॐ ज्योती जलपात्रा सनाय पादुका ॥ ज्योती जलपात्र
रुद्रात्र काय पादुका ॥ ॐ ज्योती हौं रुं कौं कां नमः ॥ ॐ रुद्र दयादि ॥ आवाहनादि ॥ धन ॥ मूर्त्ति ॥
मयती ॥ आकल ॥ ॐ सिद्धिलक्ष्मी विद्महे नवत्यधिकधीमही नन्नालक्ष्मी ॥ यथा दया ॥ ॐ ति
जलपात्र पूजा ॥ ॥ अथ मूर्त्तपात्र पूजा ॥ ॐ ज्योती मूर्त्तपात्रा सनाय नमः ॥ ॐ साममलुलाय पाठः
गकलात्मन नमः ॥ पूजार्त्त ॥ ॐ यत्र मर्त्त सिनी सर्वज्ञाता ददयाय नमः ॥ अमृत मूर्त्त वक्षा ॥ ज्योती ॥ ॐ
ज्योती मूर्त्तपात्रा सनाय नमः ॥ ॐ ज्योती मूर्त्तपात्रा सनाय नमः ॥ ॐ ज्योती मूर्त्तपात्रा सनाय नमः ॥
यविही ॥ ॐ कर्त्तव्य ॥ ॐ सकल लक्षण प्रमेथ निरिह मलयग कि म्मयाय रुद्र ॥ साधन ॥ ॐ सकल
द्वितीया ॥ विष्णु गणपति निम्ब तनु कवचाय नमः ॥ अथ मूर्त्तपात्र पूजा ॥ ॐ गगन वत्त्राय नमः ॥ ॐ स्वर्ग
त्राय नमः ॥ ॐ मलय वत्त्राय नमः ॥ ॐ पाताल वत्त्राय नमः ॥ ॐ नाग वत्त्राय नमः ॥ ॐ ज्योती हौं रुं कौं कां

नमः॥३॥खुं छदयाय नमः॥४॥आवाहनादि॥यश्चमूडादर्जयत्॥डां दीक्षां नमः॥॥ॐतिअ
र्घ्याय पूजा॥॥रुतगुदि॥वैं दीं दीं खुं को को खुं दीं दीं व॥॥आत्मपूजा॥खुं आत्मनं वन्दनं पाद
कां॥अर्कतं॥वीवरुस॥खुं सर्वजनमाहूती पादकां॥डं दीं दूं हां रूं को को नमः॥आत्मनं पृथं नमः॥
॥खुं सकललक्षणमतिशुभाय रुट्॥३॥ॐतिआत्मपूजा॥॥अथआवाहनं विश्वामूर्ता॥खुं डं
कीं दीं यासा पत्रा पत्रा सुखा खग खग वृषिनी॥सूत्रलाकगताय वी आयातु ॐ रुम भिल॥यापी
या सिद्धिलक्ष्मीय वी ॐ दं आवाहिष्य आवाहयामि॥॥विदवपूजा॥खुं ननासनाय पादकां॥खुं म
यूनासनाय पादकां॥खुं मूलासनाय पादकां॥खुं (थुं) यस्त्रदीपयस्त्रकीय वी महाध्वं कक्षपा
लाय पादकां॥वलि॥४॥वटुकस॥खुं दीं दीं कूल पूष वटुकनाथाय पादकां॥वलि॥४॥वेलजास॥खुं
मंगी गंग॥लो कूल गंगाय पादकां॥वलि॥४॥आवाहनादि॥तर्जनी दक्षगजमूर्ता॥॥ॐतिवि
दव॥॥दद्यासनपूजा॥खुं दीं दीं आधाराय कथं नमः॥दीं दीं अनन्तासनाय नमः॥दीं दीं कन्दाम

नायनमः॥ श्रीं श्रीं नाना सनायनमः॥ श्रीं श्रीं यथा सनायनमः॥ श्रीं श्रीं यथा सनायनमः॥ श्रीं श्रीं क
लत्रा सनायनमः॥ श्रीं श्रीं कर्तुका सनायनमः॥ श्रीं श्रीं धर्मसिंहा सनायनमः॥ श्रीं श्रीं नर्मिहा
सनायनमः॥ श्रीं श्रीं वेरा रुसिंहा सनायनमः॥ श्रीं श्रीं उच्यर्था सिंहा सनायनमः॥ श्रीं श्रीं अर्धर्मसिं
हा सनायनमः॥ श्रीं श्रीं अर्द्धा नर्मिहा सनायनमः॥ श्रीं श्रीं अवेरा यार्था सनायनमः॥ श्रीं श्रीं अ
नेच्यर्था सिंहा सनायनमः॥ श्रीं श्रीं वत्तवदिका पीणयनमः॥ श्रीं श्रीं डाठिया नपीणयनमः॥
श्रीं श्रीं वेजाले धनपीणयनमः॥ श्रीं श्रीं वृषुगि विपीणयनमः॥ श्रीं श्रीं यं कामवृषपीण
यनमः॥ श्रीं श्रीं वृषा सनायनमः॥ श्रीं श्रीं सिंहा सनायनमः॥ श्रीं श्रीं कोमहायता सनायनमः॥
श्रीं श्रीं वंमहावृषयता सनायनमः॥ इति दद्या सनयूजा॥ ॥ अथ ध्यानं ॥ श्रीं महातजामयीत
स्त्री वन्मिका ययूतयरा॥ यं ववकादग रुजा विधेयनयनेयता॥ १॥ इति ववृमहादवी महायता
पविस्तिता॥ माहकाशकम॥ धनु सिद्धिथानि निवृजिता॥ २॥ दानि तास्याल लिहाना काला सुखं कर्त

जगत् । उक्ता सा क्व स्या । गत बाल यत्कल पर्वतान् ॥ ३ ॥ क्व विद्विषत्क यित्क यत्क विस्मरन्त वलात्
। क्व विस्मृजं क्व वित्या ल्यत्स्व तन्नु यत्क वलन्त ॥ ४ ॥ । गेना सा रुने वली यत्का उत्र । गतु विरूषिता रघाणा
कृष्ण धवा दती व व दारु य पाणिनी ॥ ५ ॥ सद्य रुस्ते र्दुर्ग र्दुर्ग लेला अक्षारु का न कं । वामे व द्या म म ह्ययं
दक्षि । एणुल मूलमं ॥ ६ ॥ अयं वं कन्द वं वी दं कत जा म व पू वि तं । सद्य रुस्ते र्दुर्ग कर्ण वे मूर्ध्नि पाणिनी सा
दुर्कं ॥ ७ ॥ वामे रु कल ली दिव्यं मरुत वत्त पदीय कं । एषा यत्क गि त्रा दती तन्नु त्रा जा य दं गग ॥ ८ ॥
एका सा न क रु द न दिव्यं द्या य द्या व सिता । यत्क गि त्रा मरुत दती सिद्धि लक्ष्मी यत्क यत्क ॥ ९ ॥ इति ध्या
ता ध्या न पू र्ण नमः ॥ १० ॥ इति ध्या नं ॥ मूल मन्त्रे न द्रिया अलिः । खुं डं डी दूं हां डूं दूं दूं नमः ॥ ११ ॥
वलिः ॥ १२ ॥ गम य हा । खुं सिद्धि लक्ष्मी विद्महे न वत्त धि क धी महे । तन्ना लक्ष्मी यत्क यत्क ॥ वलिः ॥
अथ माला मन्त्रः ॥ १३ ॥ नमः सर्व सिद्धि या गिनी न्या नमः सर्व सिद्धि मा ह न्या नमा नि न्या दिता न नृ न न्दि
ता ये सकल कूल वक्ता यिका ये रुग वत्त वलु का पाणिनी तद्यथा डूं डी दूं हां डूं दूं दूं नमः ॥ १४ ॥

[illegible]

वधयुजा ॥ नेमय ॥ खुं कमगल पतिनाथ पादुकां ॥ खुं कमगल पतिनाथ वन्तरामा पादुकां ॥ वलिः
 ॥ वायवा ॥ खुं कम वदक नाथ पादुकां ॥ खुं कम वदक नाथ वन्तरामा पादुकां ॥ वलिः ॥ ॥ वीणा
 न ॥ खुं डंका वधी ० नाथ पादुकां ॥ खुं वृष संकट नाथ पादुकां ॥ वलिः ॥ ॥ आनय ॥ खुं मेहा कलवा
 वग्मगा न नाथ पादुकां ॥ खुं सर्व संहा विगी भूमा पादुकां ॥ वलिः ॥ ॥ नति बहु वध ॥ ॥ गता भू
 दल पूर्वा दिग्गी गानार्क ॥ खुं गूं वदना यणी दवी भूमि तां संके व वं सहिता य पादुकां ॥ खुं कं मादु गवना
 दवी नू नू रं व व नाथ सहिता य पादुकां ॥ खुं यं कामा वी दवी वधु रं व व नाथ सहित पादुकां ॥ खुं टं
 वेक वी दवी का धरु रं व व नाथ सहित पादुकां ॥ खुं तं वा ना ही दवी ड न रं रं व व नाथ सहित नाथ
 पादुकां ॥ खुं यं नू दाली दवी क पाली ग रं रं व वा य नाथ सहित पादुकां ॥ खुं यं वा मू ला दवी जी वल
 रं रं व व नाथ सहित पादुकां ॥ खुं गं मेहा लक्ष्मी दवी संहा व रं रं व व नाथ सहित पादुकां ॥ ॥ ॥
 ति भू दल ॥ ॥ गता द्वादश दल गिवा दि पूर्वा दिग्गी गानार्क ॥ खुं गिवा दवी भूमा पादुकां ॥ खुं

रुगवतीदवीअम्बायादूकां॥खुं मायादवीअम्बायादूकां॥खुं रुद्रादवीअम्बायादूकां॥खुं किंकि
नीदवीअम्बायादूकां॥खुं विमलादवीअम्बायादूकां॥खुं जेमजिददवीअम्बायादूकां॥खुं खद
कर्षणीदवीअम्बायादूकां॥खुं यलोदवीदवीअम्बायादूकां॥खुं योत्रमातादवीअम्बायादूकां॥
खुं किलिकिलिदवीअम्बायादूकां॥खुं काकिनीदवीअम्बायादूकां॥धतनवल्लि॥॥॥तिद्वाद
गदल॥॥अथविदुर्लूजा॥जोयादूकां॥जोयादूकां॥खुं यादूकां॥॥॥तिविदुर्लू॥॥अथषट्
कालवाक्छंभुंगनयूजा॥पूर्वादि॥खुं यत्रमहंमिनीसर्वरुगागकिधम्मददयायनम॥॥खुं नि
र्वाणमार्जदवीहकिगकिधम्मगिरसखाहायादूकां॥खुं विषमायद्वयगमनिमूनादिवाधन
किधम्मगिरवायेवषट्पादूकां॥खुं सकलद्विगात्रिष्टकगदलनिश्चतनुगकिधम्मकवचाय
दूयादूकां॥खुं सर्वायदोम्भाधितत्रलिमूलफगकिधम्मनद्वयायवषट्पादूकां॥खुं सकलग
ऊमथनिमूनकगकिधम्मअम्बायरूट्पादूकां॥धतनवल्लि॥॥॥तिषट्कालवाक्छंभु॥॥

{ } { } { } { }

{ } { } { } { }

[illegible]

नन्दरुपिणकि धामनि वसन्तादा ॥ खुं विषमाय हवय समनी अनादिवा धनिवाये वाषट् ॥ खुं
सकलद्विनिता विष्णु क्लृप्तलनिस्वतनु कवचाय दू ॥ खुं सर्वाय दाम्भित बलि अलूफग किन
तुग्याय वषट् ॥ खुं सकलग्रस्य मथ निनित्य मलूफग किमूत्राय रुट् ॥ ॥ दवी आग रुट् दवा
४ साकात्राया ४ मोक्षान् स्वगती वंगतं वाक्क गतं विविन्ता ॥ रुम २ स्वात्मते अन्तर्गुह्य पत्रा विविन्ता ॥
वज्र २ गकुना कर्यं विविन्ता ॥ न व नू धिवा नू व सारु कलि रुक् विविन्ता ॥ मम स्वग कुन्मर्द २ खादि
वाम रुक् स्वद्वान् विविन्ता ॥ विष्णु लन रुिन्दि २ दक्षिणया ॥ विष्णु लं विविन्ता ॥ विष्णु २ स्वद्वान् दक्षि
णया ॥ विविन्ता ॥ ता उय २ वामया ॥ विष्णु लं विविन्ता ॥ रुदय २ दक्षिणया ॥ विष्णु लं विविन्ता ॥ ता
वद्या वन्मम सकल मना वधान्मा धय २ दक्षि ॥ व व रुक् विविन्ता ॥ यत्र मका वलिक वामया ॥ विष्णु
रुयं विविन्ता ॥ रुग वती महारु व व नू यधा विणी वाम रुक् मूर्त्ति विविन्ता ॥ विदग व व लमीतं सक
ल मनुमात ४ वाम रुक् कल सी विविन्ता ॥ ॥ यल त जन वत्स वं मूध ४ गवा स नैयतं विविन्ता ॥ ॥ द

वीमहाकालीकालनासनीमूनाहृतनादंमूलायाःकुलनीवृषायाःदद्याःत्रिकर्त॥दूद
यादिद्वयर्थकं॥द्विन्दुस्तनादकारंधयर्थकं॥यसीदमदनाहुनाङ्गीकृन्सूवासूवकल्लिका
मूनतविष्टवर्णाकावस्यार्थमूर्खविकृतयत्॥ङ्गीआधन॥ङ्गीलिङ्गी॥दून्तकी॥रुद्रदय॥रुद्र
क॥॥स्वाविन्दुस्तन॥होत्रकारंधयादको॥सर्ववलि॥॥मूलमनुनदियाअलि॥ङ्गीङ्गी
होङ्गीकोनम॥घादकापूजयामि॥३॥वलि॥वर्गगतपूजा॥अथगी॥खुंसिदिलक्ष्मीविष्टहृत्
वत्यधिकधीमही॥तनालक्ष्मी॥यत्रादयात्॥वलि॥॥आवाहनादि॥यात्रिमूर्धादगयत्॥॥
॥तिघाणीराजकुलरुद्रात्रकयावयर्थकमेतन्नालीसिदिलक्ष्मीदवीथल्लिखार्जनविधिसमा
प्त॥॥तनामूलसिदिलक्ष्मीरुद्रपूजनं॥दण्डलियाय॥वलि॥दवीरुद्रनात्राह॥॥वित्तवना
वम॥खुंङ्गीआसतत्वायसाह॥खुंङ्गीविद्यातत्वायसाह॥खुंङ्गीनिवतत्वायसाह॥खुंङ्गीङ्गीङ्गी
वर्तत्वायसाह॥॥उन्नमस्तकात्र॥खुंङ्गीङ्गीङ्गी॥अखण्डमण्डलाकारंशार्कयन्तववावर्ततत्य

दं दर्शितयन तस्मै ध्यायु न व न मः॥ यु नू र्वे का यु नू र्विष्णु यु नू द व म ह्म व ॥ यु नू द व ज ग ह्म र्वे तस्मै
ध्यायु न व न मः॥ उं ज य व म यु नू र्वा न मः॥ उं ज य व म वि यु नू र्वा न मः॥ उं ज य व मा या र्था यु नू र्वा न म
॥ उं ज य द्वा स ना य न मः॥ वलिः॥ कूर्मा स ना य न मः॥ ध व आ स न त य ॥ घा र्ध्व मू र्क त वि क र ली ॥ उं
ज्जुं सकल ल क्प य म ध नि भू त न ग कि धा म्भ म्भ्रा य रु ट् ॥ घा दू कां ॥ व रु मू डा या मू ख व रु न ॥ उं
ज्जुं दू रु ट् व रु पं रु न स्वा हा ॥ द ग द्वा व स्य र्ग न ॥ उं ज्जुं य ल म क ल क ल म व ल जौ दू रु ट् स्वा हा ॥
॥ भू थ न्या स ॥ ज्जुं सकल ल क्प य म ध नि भू त न ग कि धा म्भ म्भ्रा य रु ट् ॥ ४ ॥ क व (ला ध न ॥ ज्जुं य व म
हं सि ती स च रु ता ग कि धा म्भ म्भ्रा य र्था न मः॥ ज्जुं नि र्वा ण मा र्ज द ह्मि ण कि धा म्भ न र्ज नी र्था न मः॥
घा दू कां ॥ ज्जुं वि ष मा प ह्न व य ण म नि भू ता दि वा ध ग कि धा म्भ म ध्र मा र्था घा दू कां ॥ ज्जुं सकल दू रि
ता नि रु द्वा य ल स्र न ल ग कि धा म्भ म्भ्रा मि का र्था न मः॥ ज्जुं स र्वा य द्वा म्भ वि व णी भू लू फ ग कि धा म्भ
क नि षा र्था न मः॥ ज्जुं सकल ल क्प य म नि भू त न ग कि धा म्भ म्भ्रा य क व त ल पृ षा र्था न मः॥ इति

करं न्यासः ॥ शुं नमः सर्वसिद्धिमागिनायः पूर्ववक्त्राय पादुकां ॥ शुं नमः सर्वसिद्धिमाह्वयः
 दक्षिणवक्त्राय पादुकां ॥ शुं नमः त्रिधादिता नन्दनान्दिताये डरु वक्त्राय पादुकां ॥ शुं सक
 लकलवक्त्रायिकाये यष्टिमवक्त्राय पादुकां ॥ शुं रगवक्त्राय पुकाया लिखे दुद्वक्त्राय पादु
 कां ॥ ॐ ति वक्त्राय पादुकां ॥ ॐ ति वक्त्राय सः ॥ ॥ तं रु म ॥ ॥ मं द द य ॥ ॥ धा ना सो ॥ ॐ ति द रु न्या
 सः ॥ ॥ ॐ मूरव ॥ ॥ ॐ वा म ना सा पूट ॥ ॐ द क ना सा पूट ॥ ॐ वा म न ग ॥ ॐ द क न य ॥ ॐ वा म क ॥ ॐ
 ॥ ॐ द क क ॥ ॐ न लि ॥ ग ॥ म ॥ यु ॥ ॐ ति न व द्वा रं न्या सः ॥ ॥ शुं य व म र्द सि नी सर्वरु तां द द
 या य न मः ॥ शुं निर्वर्ण मार्ग द रु फिण कि ध म्नि लि व स खा हा ॥ शुं विष मा य द व य ग म नी अ ना दि
 वा ध ग कि ध म्नि लि खा ये व व द् ॥ शुं सकल द्रविता विष्णु क्लृण द ल निख त नु ग कि ध म्नि क व द्वा य द्
 ॥ शुं सर्वा य द्वा म्नि धि त व लि अ ल क ग कि ध म्नि न य द्वा य व व द् ॥ शुं सकल ग क्ख म थ नि अ न
 क ग कि ध म्नि अ न्ना य रु द् ॥ ॐ ति अ न्ना सः ॥ ॥ द्वा अ ग रु द्वा ॥ सा का वा या ॥ अ द्वा रं ख ग वा

वृंगर्तवाङ्मगर्तविविधम् ॥ रुसश्चात्मनिभूतयहयवाविविधम् ॥ वन्नश्चक्रनाक्षयविविधम् ॥
 ननवृधिवानुवसा रुक्मिणिहस्तविविधम् ॥ ममस्वर्गकर्ममर्दखादिश्चामहस्तस्वद्वामविवि
 दम् ॥ विष्णुललाहिलिङ्गिश्चदक्षिणाध्वविष्णुलविविधम् ॥ विष्णुश्चस्वर्गनादक्षिणाध्वविविधम् ॥ ता
 उयश्चामयाध्वपार्श्वविविधम् ॥ कृदयश्चदक्षिणाध्वमूर्कगविविधम् ॥ तावद्यावन्ममसकलमना
 वधान्याधयश्चदक्षिणाध्ववहस्तविविधम् ॥ यत्रमकात्रलिकवामयाध्वमूर्कयविविधम् ॥ रुगवती
 महार्कवृषध्वनिवा मरुस्तमूर्ध्वविविधम् ॥ विदग्धवन्मिनासकलमन्त्रमातश्चामहस्तक
 लविविधम् ॥ गूढिकलायूधदण्डन्यासः ॥ ॥ युगतजनवत्सलभूधः ॥ गवायनपुनर्विविधम् ॥
 गूढिभूतन्यासः ॥ ॥ दक्षीमहाकालीकालनामनिभूताहृतनादभूमूलायाः ॥ कन्दलनीयूपा
 याः ॥ दद्याद्विभक्तं ॥ द्वादश्यादिविन्दुयर्थकं ॥ द्वाविन्दुस्तनादिवक्त्रार्धपर्यन्तं ॥ यसीदमद
 नाशुवाङ्गीकृत्स्नसूत्रासूत्रकलिकाशूननविश्ववर्गीकात्रस्यार्थमूर्ध्वविभक्तयत् ॥ द्वाभूधन ॥ द्वालि

[illegible]

ॐ क्रीं ह्रीं क्लीं कौं नमः ॥ ३ ॥ खूं क द या य न मः ॥ ४ ॥ आ वा रु ना दि ॥ य ३ मू र्धा ॥ डों डी क्लीं हूं सं ॥
 न्ति मू र्धा पा न पू जा ॥ ॥ रु त पु त्रि ॥ उं डों डीं हूं क्लीं क्लीं हूं डों डीं ॥ ॥ आ त्म पू जा ॥ खूं आ त्म न च न्द न
 पा द कौं ॥ अ क र्त्त ॥ वी र रु त्म ॥ खूं स र्व ज न मा रु ती पा द कौं ॥ उं डों डीं हूं हूं क्लीं कौं नमः ॥ आ त्म न पृ ष्ठा पा
 द कौं ॥ खूं स क ल ग कृ प म थ नि मू र्धा य रु द् ॥ ३ ॥ न्ति आ त्म पू जा ॥ ॥ अ थ आ वा रु न वि ख णा मू र्धा ॥ खूं
 उं डों डीं या सा य वा य वा सृ ष्ठा ख ग ष्ठा ख ग वृ षि नी ॥ सू त्र ला क ग ता सो म्या मा या क मि रु म पु ल ॥ धी धा
 धा मि धि ल क्क्ष्मी द वी ॥ दं आ वा रु षि य आ वा रु या मि ॥ ॥ वि द व पू जा ॥ खूं न वा स ना य पा द कौं ॥ खूं म यू वा
 स ना य पा द कौं ॥ खूं मू णा स ना य पा द कौं ॥ खूं ध्ये य रु त्र द्वा प द मू की द वी म हा धी क क रु या ला य पा
 द कौं ॥ व लि ॥ व द् क स ॥ खूं डों डीं कू ल पू त्र व द् क ना था य पा द कौं ॥ व लि ॥ व ल जा स ॥ खूं गं गी गूं ग ॥
 (ह्रीं कू ल ग (ग व ना य पा द कौं ॥ व लि ॥ आ वा रु ना दि ॥ त र्ज नी द णु ग ज मू र्धा ॥ न्ति वि द व पू जा ॥ ॥
 द वा स न पू जा ॥ खूं डों डीं आ धा व ग क र्त्त नमः ॥ डों डीं अ न ना स ना य नमः ॥ डों डीं क न्दा स ना य नमः ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ यं वायुं ध्वजं रुद्रं स्नाय यवनाधिपतय पादुकां ॥ ॐ स्मृं सुकवनाय गदा रुद्रं स्नाय जलाधिपतय
पादुकां ॥ ॐ स्मृं कूर्वाणायाय विष्णुं लहस्नाय रुद्राधिपतय पादुकां ॥ ॐ स्मृं भूतनाय वक्र
स्नाय नागाधिपतय पादुकां ॥ ॐ स्मृं बुद्धालाय द्रुहस्नाय सर्वाधिपतय पादुकां ॥ धतनी
वलिः ॥ अथ यदुर्ध्वं प्रयुजा ॥ दक्षिणं द्वात्रिंशत् ॥ शुं कमलगणपतिनाथ पादुकां ॥ शुं कमलगणपति
नाथ वल्गराम्ना पादुकां ॥ शुं अठित्यातपीठनाथ पादुकां ॥ शुं अंकालपीठ पादुकां ॥ धतनीवलिः ॥
पश्चिमं द्वात्रिंशत् ॥ शुं सकलसंहरावलात्कटकायपालनाथ पादुकां ॥ शुं महासकलसंहरावलात्कटका
यपालावल्गराम्ना पादुकां ॥ शुं वृषसंकटनाथ पादुकां ॥ धतनीवलिः ॥ उत्तरं द्वात्रिंशत् ॥
शुं कमवदकनाथ पादुकां ॥ शुं कमवदकनाथ वल्गराम्ना पादुकां ॥ शुं सर्वसंहरात्रिणीम्ना पादुकां
॥ धतनीवलिः ॥ पूर्वं द्वात्रिंशत् ॥ शुं यां यागिनीया पादुकां ॥ शुं रुं रुं यागिनीया ४ पादुकां ॥ धतनीवलि
ः ॥ अति यदुर्ध्वं ॥ अथ यदुर्ध्वं यथाधिकार्यां यमुद्रयकिं प्रयुजा ॥ पूर्वं ॥ शुं अं अं वीरनाथ पादुकां ॥

खूं जीं पी द न कंद व नाथ पादू कां ॥ खूं जीं पी का ध मू नि नाथ पादू कां ॥ खूं जीं पी व नि व नाथ पादू कां ॥
 खूं जीं पी ज य द थ नाथ पादू कां ॥ ध त न व लि ४ ॥ द दि ले ॥ खूं जीं पी कं काल डा मि नू म्वा पादू कां ॥
 खूं जीं पी मा तं गी मू म्वा पादू कां ॥ खूं जीं पी वी ना व ली डा मि ना मू म्वा पादू कां ॥ ध त न व लि ४ ॥ य छि म ॥
 खूं जीं पी वि रु व ना न न्द नाथ पादू कां ॥ खूं जीं पी वि ज य नाथ पादू कां ॥ खूं जीं पी वा म द व नाथ पादू कां ॥
 खूं जीं पी ग र्ज न न्द नाथ द व पादू कां ॥ खूं जीं पी रु डा गी व र्ध ना न न्द नाथ पादू कां ॥ ध त न व लि ४ ॥
 ड रु व ॥ खूं जीं पी य का न न्द नाथ पादू कां ॥ खूं जीं पी बू द्वा न न्द नाथ पादू कां ॥ खूं जीं पी मू ज व कु ना न न्द
 नाथ पादू कां ॥ खूं जीं पी वि न्दा न न्द नाथ द पादू कां ॥ खूं जीं पी वा ध ना न न्द नाथ द पादू कां ॥ ध त न व लि ४ ॥
 न्ति व रु त्र य वी धि का यां गु रू पं कि पू जा ॥ ॥ मू थ व रु ४ का ले षी ना ना दि पू जा ॥ खूं मूं जं ज मू नी पा
 दू कां व लि ४ ॥ षी ना न ॥ ॥ मू य य ॥ खूं मूं रूं रूं मू नी पादू कां ॥ व लि ४ ॥ ॥ ने म र्थ ॥ खूं मूं मूं मा रु न्दो पा
 दू कां ॥ व लि ४ ॥ ॥ वा य द्य ॥ खूं मूं मूं मूं कं र्थ न्दो पादू कां ॥ व लि ४ ॥ ॥ न्ति व रु ४ का ले रूं रूं ना दि पू

जा ॥ अथ अष्टदलवक्त्राद्यादि अमिताभदि कर्मनमूजा ॥ ॥ खुं हं सा सनायनमः ॥ खुं अं आं ॥
ॐ हं मं ॥ ॐ नं डं डीं अं मं ॥ धी वक्रो यणी दवी अमिताभं रुं व व सहिताय पादुकां ॥ खुं वृ सा सना
यनमः ॥ खुं कं खं गं घं ङं धी माहं ध्वरी दवी धी वृ रुं व व सहिताय पादुकां ॥ खुं मयूना सनायन
मः ॥ खुं वं वृं ऊं मं अं धी की मा वी दवी धी वृ रुं व व सहिताय पादुकां ॥ खुं ग वृं सा सनायनमः ॥ खुं
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ धी वे क्व वी दवी धी का धरुं व व सहिताय पादुकां ॥ खुं महिषा सनायनमः ॥ खुं तं थं दं धं नं
धी वा वाही दवी धी ड न रुं व व सहिताय पादुकां ॥ खुं गजा सनायनमः ॥ खुं यं रुं वं रुं मं धी वृ न्द्राणी द
वी धी कयाली ग रुं व व सहिताय पादुकां ॥ खुं यता सनायनमः ॥ खुं यं वं लं वं धी यामू धी दवी धी रुं व व न
रुं व व सहिताय पादुकां ॥ खुं नवा सनायनमः ॥ खुं गं वं मं रुं धी म हा लक्ष्मी दवी धी मं हा न रुं व व सहि
ताय पादुकां ॥ धतनी वलिः ॥ ॥ अति अष्टदलवक्त्राद्यादि अमिताभदि कर्मनमूजा ॥ ॥ अथ द्वाद
लदलनिवादिपूर्वादि कर्मनमूजा ॥ ॥ खुं निवा दवी अम्बा पादुकां पूजयामि ॥ वलिः ॥ खुं रुं ग वति दवी

ॐ स्वायादूकां ॥ खुं मायादवी ॐ स्वायादूकां ॥ खुं रुद्रादवी ॐ स्वायादूकां ॥ खुं किंति किंतिदवी ॐ स्वायादू
कां ॥ खुं विमलादवी ॐ स्वायादूकां ॥ खुं यमजिह्वादवी ॐ स्वायादूकां ॥ खुं त्वदकषनादवी ॐ स्वायादूकां
॥ खुं द्यौषादवी ॐ स्वायादूकां ॥ खुं चोत्रमातादवी ॐ स्वायादूकां ॥ खुं किंकिनीदवी ॐ स्वायादूकां ॥ खुं
काकिनीदवी ॐ स्वायादूकां पूजयामि ॥ ध्वतर्नवलिः ॥ ॥ इति द्वादशदलनिवादिपूजा ॥ ॥ अथ त्रिवृ
त्पूजा ॥ द्वां यादूकां ॥ द्वां खुं आत्मतत्वाय यादूकां ॥ अंतर्वृत् ॥ द्वां यादूकां ॥ द्वां खुं विशातत्वाय यादूकां ॥
मध्यावृत् ॥ खुं यादूकां ॥ द्वां खुं निवतत्वाय यादूकां ॥ वहिर्वृत् ॥ ध्वतर्नवलिः ॥ ॥ इति त्रिवृत्पूजा ॥ ॥
अथ षड्दशवाक्कदय्यादि षड्दशपूजा ॥ आद्यादि ॥ ॥ खुं यत्र महीसिनी सर्वरुतालकिधाम्नदद
याय नमः ॥ खुं निर्वाणमार्गदहकिणकिधाम्ननिवसस्वाहा ॥ खुं विषमोपस्रवयुगमनी अनादिबाध
नकिधाम्ननिखायेव षट् ॥ खुं सकलद्रितात्रिष्टुक्कदलस्रनिगतलनकिधाम्नकवयाय दूं ॥ खुं स्रवाप
दाम्नाधितत्रलिअल्फनकिधाम्ननवययाय वषट् ॥ खुं सकलग्रुपमथनिअनकनकिधाम्नअस्त्रा

[illegible]

[illegible]

॥ का दक्षिण कर्तुः ॥ न. लि. ग. ॥ म. यु. उ. ॥ ॥ शु. यत्र महं सिनी सर्वज्ञाता गकि धाम्नं ददया यनमः ॥ शु. नि
र्वाण मार्जय रुकिण कि धाम्नं निरमसाह ॥ शु. विषमाय स वय समनिमूना दिवा धन कि धाम्नं निखाय
वायत् ॥ शु. सकल दूत्रिता त्रिदृक्का गदल निखत नु क व वा य दू. ॥ शु. सर्वाय दाम्ना धित व लिमूल फण
कि धाम्नं न त्रुया य व यत् ॥ शु. सकल गं य मथ नि निख मल फण कि धाम्नं मुखा य रुट्. ॥ ॥ दवा
आ गच्छ २ दवा ४ साका वाया ४ आक्षान् स्वग वा रं गतं वा म्भ गतं विविन्म ॥ रु स २ स्वात्म ति मु नू य रु य वा
विविन्म ॥ वन्न २ स्वग फना क्यं विविन्म ॥ न व वृधिरानु वया रु कलि रु क विविन्म ॥ म म स्वग फ न द
म द्द खा हि स्वा हि वा म रु स स्व दाम विविन्म ॥ विमूल न रु दि २ दक्षिण पा र्श्व मु क्क र्ण विविन्म ॥ विवि
२ स्व दू ल दक्षिण पा र्श्व विविन्म ॥ ना रु य २ वा म पा र्श्व पा र्ण विविन्म ॥ दू रु य २ दक्षिण पा र्श्व मु क्क र्ण वि
विन्म ॥ ना व श्रा व त्त म सकल म ना व था त्सा ध य २ दक्षि. (ग व रु स विविन्म ॥ यत्र म का वृ लिक वा म
पा र्श्व मु क्क र्ण विविन्म ॥ रु ग व ति म रु रु व वृ य धा विणा वा म रु स मु क्क र्ण विविन्म ॥ विद ग व ल मि तं

सकलमन्त्रमातः वामहस्तकलसंविचित्रा ॥ ॥ अथतज्जनवत्सलसूधः ॥ वामनयमंविचित्रा ॥ ॥
दवीमहाकालीकालनासनीमूनाहतादंमूलायाः कलुलनीवृषायाः दद्याः विनर्तः ॥ दूदद
यादिन्दुययर्तः ॥ दूविन्दुस्त्रादुक्कर्वधययर्तः ॥ प्रसीदमदताहुवाङ्गीकृत्स्नसूत्रकलुिकाभू
ननविष्टवसीकावस्यथमूर्ध्वविनयतः ॥ ज्ञोआध्वनः ॥ धौर्लीगः ॥ दूनालो ॥ रुद्रदयः ॥ रुद्रकः ॥
स्त्राविन्दुस्त्रातः ॥ हावक्कर्वधयादकाः ॥ सर्वेणवलिः ॥ ॥ मूलमन्त्रनयियाअलिः ॥ ॐङ्काङ्काङ्काङ्काङ्काङ्का
नमः ॥ पादकाः ॥ ३ ॥ वलिः ॥ षष्ठं गनयूजा ॥ गभययी ॥ खुं सिद्धिलक्ष्मीविद्यहन्तवत्यधिकधीमहं ॥ गन्नाल
क्ष्मीः ॥ यत्रादयात् ॥ वलिः ॥ ॥ आवाहनादि ॥ यानिमूर्धादर्शयतः ॥ ॥ वृत्तिमूलसिद्धिलक्ष्मीपूजाविधिः ॥
॥ ततावलियूजा ॥ थलिलियाखवलालिथहाकवालाकवलिम् ॥ ॐ धौं खुं दवायूवदूकनाथक
यिलजठारावरासूत्रजिन्नकालामूर्ध्वसर्वविघ्ननागयदू ॥ ३ ॥ रुद्रस्त्राहा ॥ वदूकनाथवल्गुमासहि
तायवलिं टक्कस्त्राहा ॥ वृत्तिवदूकवलिः ॥ ॥ थलिलियाखवलाकथूहाकवालाकवलिम् ॥ ॐ धौं खुं





ASHA ARCH.

STON M. T. W.

1034



कूं हूं देवस्वनामिधतयस्ववन्नराम्नामहितायवर्लिष्टक २ स्त्राहा ॥ वृत्तिरुपवलि ४ ॥ थलिलिया
 जवलातिधकादूवालाकवलिम ॥ उं डों घों खुं डें गं गलपतयस्ववन्नराम्नामहितायवर्लिष्टक २
 रुष्टाहा ॥ वृत्तिगलपतिवलि ४ ॥ थलिलियाजवलाद्धथकादूवालाकवलिम ॥ कों घों खुं सर्वथा
 गिनीय ४ सर्वपी १० य ४ सर्वकणपालसादूं दूं रुष्टाहा ॥ वृत्तियागिनीवलि ४ ॥ थलिलिद्धवना
 रागवलिम ४ ॥ खुं निवारुगवतीत्रैव मायारुडातथैवत्र किंकिनीविमलावैवयमजिक्ताहककष
 ण ॥ र्यं ठादवीत्रैवमाता किंकिनीकाकिनीतथा ॥ सर्वविद्धिविनागाय सर्वगकृनिवात्रलं ॥ सर्वल
 क्ष्मियमनिर्णय सर्वसायत्रिष्टुत्रितं ॥ गुयादगमलायकथासिद्धिलक्ष्म्यावर्लिष्टक २ स्त्राहा ॥ वृत्तिनि
 वादिवलि ४ ॥ दवीसद्धवनावलिम ४ ॥ उं नम ४ सर्वसिद्धियोगिनीयात्रम ४ सर्वसिद्धिमाहस्या न
 मानिषादितानन्दनन्दिगायै सकलकूलवक्रनायिकायै रुगवत्येवगुकापालिन्यै तम्रथा ॥ उं डों
 दूं हूं कूं डों कों नम ४ उं यत्रमहं सिनी निर्वर्णमार्जद विषमायस्ववयुगमनी सकलद्वितीयात्रिष्टु

कललनि सर्वा यदा म्हा धितत्रलि सकललकु यमथनि द्वा आगदु आगदु रुसहस वन्नवन्न
नव नूधित्रानु वसारु कलि ममसुग कुमदमद खादिखादि विगूलन रिन्द्रि रिन्द्रि द्विन्द्रि द्विन्द्रि
खड्गन ताउय ताउय द्वादय द्वादय तावथा वन्नमसकलमना वथान्नाधय साधय यत्रमकावलि
क रुगवतीमहा रुत्रव नूयधत्रिलि सिदग वत्रलमिगसकलमनु मात ४ यलत रुन वत्सलद्वीम
हाकालिकालनागनि दूँ दूँ दूँ यसाद मदनानु वी कू वू कू सू वा सू व कन्य काँ काँ धी दूँ रुट् रुट् रुट् सो
हा ॥ इति श्री सिद्धिलक्ष्मी देव्या चर्चनं ॥ अथ श्री युक्ता काली पूजनं ॥ मूलखण्डे ॥ एकपूष्यताया
नैकहा ॥ एकलासनं एकनसि त्रिसिधायनी ॥ ॐ यत्रमनिवर्ग किनाथपीपी अलखपात्रं यत्राक्रम
सुयुत्रयादाम्बुजं यावत्प्रानोमि ॥ वन्दनाकृतमादाय ॥ नतान्यासः ॥ स्वाहा भूतनागकिंय भूखा
यरुट् ॥ ४ ॥ कत्रलाधने ॥ ॐ रुं कनिषायै नमः ॥ ॐ सिद्धिकलाली भूतामिकायै नमः ॥ ॐ जीर्णं दूँ
मध्यामोयै नमः ॥ ॐ श्रीं रुं तर्जनीयै नमः ॥ ॐ नमः ॥ अंगुष्ठायै नमः ॥ ॐ स्वाहा भूखा यरुट् ॥ इति कत्रन्यास

॥ ॐ सर्वस्वता सर्वरुता दद्याय नमः ॥ ॐ सिद्धिकर्तालाञ्जमृताङ्गामालिनी नृकिणि वसंसा
 हा ॥ ॐ श्रीं श्रीं वेद वेदनीञ्जनादिवाधकालिनी निखायेवावट् ॥ ॐ श्रीं श्रीं वजिनी वज्रधनाय स्वत
 नुपि हलकवत्रायट् ॥ ॐ नमः ॥ नित्यमल्लफणकिनयस्ववृषिणी सहस्रनयनयाय वषट् ॥ ॐ स्वा
 हा मूननगकञ्जसुखायट् ॥ ॐ र्गगन्यासः ॥ ॐ ॐ सिद्धिकर्ताला दक्षिणवक्त्राय नमः ॥ दक्षिणकर्तु
 ॥ वामकर्तु ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं वामवक्त्राय नमः ॥ नागाय ॥ ॐ श्रीं श्रीं नमः ॥ स्वाहा मध्यमवक्त्राय नमः ॥ ॐ ति
 वक्त्राय नमः ॥ ॐ निखाय ॥ ॐ दद्याय ॥ सिनारिमध्या ॥ द्विदक्षिणनरु ॥ कवामनरु ॥ त्रिदक्षिणना
 गार्या ॥ ली वामनागार्या ॥ श्रीदक्षिणकर्तु ॥ श्रीवामकर्तु ॥ श्रीलिङ्ग ॥ श्रीगुठ ॥ ॐ श्रीमध्या ॥ नववक्त्र
 ॥ ॐ नमः ॥ नगिवावधनं ॥ स्वा निखादि ॥ हाया दानकान् ॥ ॐ तिमूलविद्यान्यासः ॥ ॐ अर्घ्यपात्रसाध
 नं ॥ ॐ ॐ महायागिनी अर्घ्यपात्रासनाय नमः ॥ ॐ ॐ शुक्क कालिकरुट् ॥ शिवा ३ ॥ ॐ हूं शुक्क कालिक
 दद्याय नमः ॥ ॐ हूं शुक्क कालिक निवसंसाहा ॥ ॐ हूं शुक्क कालिक निखायेवावट् ॥ ॐ हूं शुक्क कालि

[illegible]

ॐ नमः॥ यष्टिमत्॥ ॐ श्रीं यमाय दत्ताय दूँ ॐ रुद्र नमः॥ वामत्॥ ॐ श्रीं दय दत्ताय दूँ ॐ रु
द्र नमः॥ दक्षिण॥ ॐ श्रीं नन्दिक किलि २ ॐ नमः॥ दक्षिण॥ ॐ श्रीं दूँ माहाकालाय दूँ ॐ नमः॥
॥ इति द्वात्रयूजा ॥ ॥ कर्तुं कामध्यासनेयूजा ॥ ॐ ॐ वकादासनाय नमः॥ ॐ ॐ कलासनाय न
मः॥ ॐ ॐ नालासनाय नमः॥ ॐ ॐ मूकलासनाय नमः॥ ॐ ॐ सहस्रदलत्रकासनाय नमः
॥ ॐ ॐ कृतयुगमूलासनाय नमः॥ ॐ ॐ कृतयुगमूलासनाय नमः॥ ॐ ॐ द्वापयुगमूलासना
य नमः॥ ॐ ॐ कलियुगमूलासनाय नमः॥ ॐ ॐ ज्येष्ठमूलासनाय नमः॥ ॐ ॐ ज्येष्ठमूलास
नाय नमः॥ ॐ ॐ सामवेदमूलासनाय नमः॥ ॐ ॐ अथर्ववेदमूलासनाय नमः॥ ॐ ॐ याकसासनाय
नमः॥ ॐ ॐ वीतिहाजासनाय नमः॥ ॐ ॐ समतासनाय नमः॥ ॐ ॐ आसनासनाय नमः॥ ॐ ॐ या
यासनाय नमः॥ ॐ ॐ समीनासनाय नमः॥ ॐ ॐ वाकनाजासनाय नमः॥ ॐ ॐ सर्वासनाय नमः॥
ॐ ॐ लूटयतासनाय नमः॥ ॐ ॐ वक्रयतासनाय नमः॥ ॐ ॐ विष्णुयतासनाय नमः॥ ॐ ॐ नूट

廿八

1

द्विकूट २ धन २ श्री २ श्री २ वल्लभ मय वर्ष २ सर्वानुयक्तान् आदलय २ आकाशय २ विर्यवाञ्छादद २
 अविघ्नकूट २ नमामहायकनाथ श्री ३ श्री ३ महाधनददममसर्वधनप्रयच्छ २ सिद्धिमे
 त्रीहं २ नमः ४ साहा ॥ वृत्तिरागविद्या ॥ ॥ आवाहनादि ॥ मूर्धा कणल ॥ घर्त ॥ गनसंयुक्त ॥ उं हूं वे
 लाकृतामवादितावकायनमः ॥ उं हूं मलयकेशवमीमधमवकायनमः ॥ उं हूं मलयलक्ष्मीवाम
 वकायनमः ॥ उं हूं कालसंकर्षणीयादका ॥ मकटस्थन ॥ उं हूं अक्षकर्तुनमः ॥ वक्रवंध ॥ उं कं हूं
 सफकाटश्वरीनमः ॥ भूमधो ॥ उं हूं सिद्धिलक्ष्मीनमः ॥ क ॥ उं हूं राजराजश्वरीनमः ॥ ददय ॥ उं
 हूं वामवामश्वरीनमः ॥ दुर्द्ध ॥ वृत्तिदद्याद्यासयूजा ॥ ॥ आवाहनादि ॥ धनू ॥ माला कर्लकिना ॥ आ
 कर्षदाविणी ॥ विरवता ॥ पाण ॥ मूकण ॥ श्ववती ॥ विनाकि ॥ तर्जनी ॥ मूढानवकंदर्गयत ॥ ॥ यंत्र
 यंत्रयूजयत ॥ आं हूं हूं हूं गृष्टिकालिकायै नमः ॥ मूं महासुक्तिकालिकायै नमः ॥ हूं हूं हूं महासीहा
 वकालिकायै नमः ॥ उं हूं हूं हूं अनाककालिकायै नमः ॥ उं हूं हूं हूं रासाकालिकायै नमः ॥ वृत्ति यंत्रक

[illegible]

सर्वसमप्रसन्नं विद्यत निरुद्धं क्रीडंती किंचिद्विह किलिह किंचिद्विह न २ दह २ य स २ रुं सिद्धरं व
 वा सर्वयागिनीनां समप्रसन्नं कात्रिणी जेला कृवा सिनी रुं व विथ समदुर्गव न पर्वत वा सिनी प १०
 य ० वा सिनी सर्वगतं जय विजय अजित अय वा जितं द्वां श्री त व नी रु व नी रु व नी हा व नी डी अ
 समय समय हिता रु व रं द्वां श्री रु व स हि त जे ला कृ मा त आं कां ४ वूं रुं न म ४ हा हा ॥ वृं ति स म
 य विद्या ॥ ॥ म ॥ ध्या ॥ व रु स्या ० पूजा ॥ उं रुं ध्या डा डि या न म हा घी १० म हा म न्न ल कालि कां न म ४ ॥ उं रुं ध्या
 जालं ध्रु व घी १० म हा म न्न ल कालि कां न म ४ ॥ उं रुं ध्या धृ रु गि त्रि घी १० म हा म न्न ल कालि कां न म ४ ॥ उं रुं ध्या
 काम नू य घी १० म हा म न्न ल कालि कां न म ४ ॥ उं रुं रुं रुं रुं रुं कालि का र ४ रुं ॥ वृं ति व रु ४ घी ० पूजा ॥ ॥
 अरु प य ॥ उं रुं यं वृं रुं कालि कां न म ४ ॥ उं रुं वं का मा वी कालि कां न म ४ ॥ उं रुं तं वा वा ही कालि कां न म ४
 ॥ उं रुं यं वा मू ला कालि कां न म ४ ॥ उं रुं कं मा रु व वी कालि कां न म ४ ॥ उं रुं अ व का णी कालि कां न म ४ ॥ उं
 रुं रुं वे रु वी कालि कां न म ४ ॥ उं रुं र्ण म हा ल कालि कां न म ४ ॥ वृं ति अरु प य मा रु का ग ल पूजा ॥ ॥

अथ धातुगणयत ॥ ॐ शं डाया कालिका नमः ॥ ॐ शं रं क्वात्र कालिका नमः ॥ ॐ शं सि सि रु कालिका नमः
॥ ॐ शं द्वि धीत्र कालिका नमः ॥ ॐ शं क नाला कालिका नमः ॥ ॐ शं त्रा त्रा त्र कालिका नमः ॥ ॐ शं ली लाना
कालिका नमः ॥ ॐ शं ड्री ड्री मती कालिका नमः ॥ ॐ शं ड्रु ड्रु त्रिकालिका नमः ॥ ॐ शं ड्रु ड्रु कालिका नमः ॥
ॐ शं श्री श्री कालिका नमः ॥ ॐ शं रं क्वात्रो कालिका नमः ॥ ॐ शं न न न न कालिका नमः ॥ ॐ शं म म मायी का
लिका नमः ॥ ॐ शं स्वा स्वा मिनी कालिका नमः ॥ ॐ शं हा हा सिनी कालिका नमः ॥ ॐ ति धातुगणयत पूजा ॥
अथ दणयत ॥ ॐ शं वा जिनी कालिका नमः ॥ ॐ शं वा त्रणा कालिका नमः ॥ ॐ शं ण की कालिका नमः ॥ ॐ
शं कि टिका कालिका नमः ॥ ॐ शं वलि मुख कालिका नमः ॥ ॐ शं सूर्य पुरु कालिका नमः ॥ ॐ शं हा नू क कालिका
नमः ॥ ॐ शं य श स्य कालिका नमः ॥ ॐ शं णा दूत्र कालिका नमः ॥ ॐ शं का दू का कालिका नमः ॥ ॐ शं यु क
कालिका नमः ॥ मध्या ॥ ॐ ति दणयत पूजा ॥ ॥ मध्या ॥ ॐ शं अ नू क कालिका नमः ॥ ॐ शं ड्री मया म कालि
का नमः ॥ ॐ शं ड्रु त्र त्रती कालिका ये नमः ॥ ॐ शं ड्रु रा ग दाय कालिका नमः ॥ ॐ शं श्री स्वा यनी कालिका

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथावहं स्मृतानां धियस्तथं ब्रह्म कुरुपा लाय ब्रह्मानी मुख्या गिना सहिता यनम ॥
ॐ कुरु कुरु गय द धूमा कुरु स्मृतानां धियस्तथं अग्नि कुरुपा लाय स्वाहा मुख्या गिना सहिता यनम ॥
ॐ कुरु कुरु जम अ काल दधु स्मृतानां धियस्तथं जम न कुरुपा लाय काल वायी मुख्या गिना सहिता यन
म ॥ ॐ कुरु कुरु रुद्र अग्नि य रु स्मृतानां धियस्तथं अग्न न कुरुपा लाय अग्नानी मुख्या गिना सहिता यन
म ॥ ॐ कुरु कुरु नथ दधन काल पाग स्मृतानां धियस्तथं वज्र कुरुपा लाय वाव्री मुख्या गिना सहिता यन
म ॥ ॐ कुरु कुरु यरु वरु म पाग वन स्मृतानां धियस्तथं वज्र कुरुपा लाय वायवी मुख्या गिना सहिता यन
म ॥ ॐ कुरु कुरु यत्र लव लक्ष्मी वन स्मृतानां धियस्तथं कुरु वरु कुरुपा लाय कोवनी मुख्या गिना सहिता यन
म ॥ ॐ कुरु कुरु गय सरु कुरु रतनाथ स्मृतानां धियस्तथं श्रीगान कुरुपा लाय श्रीगानी मुख्या गिना सहिता यन
म ॥ ॐ कुरु कुरु रागीश्वर स्मृतानां धियस्तथं विश्व कुरुपा लाय वैष्णवी गकि सहिता यनम ॥ ॐ कुरु कुरु यद्रवन
स्मृतानां धियस्तथं यत्र मष्टि कुरुपा लाय यत्र मष्टि गकि सहिता यनम ॥ नूति दगदियात्र वाक् ॥

विद्याऽऽलिः॥ॐॐ वज्रयागवतीस्वाहा॥माध्या॥ॐॐ सिद्धिकलाजीकुंॐ श्रीरुं नमः॥स्वाहा॥धीयु
क्तकालिकायै नमः॥३॥मर्तुग॥गययो॥ॐॐ महामन्त्राय विद्महे कालसंकर्षणी धीमहि तन्नाम कि
यथादयात्॥वलिः॥॥मूथवलि विद्य॥ॐॐ उल्का मूर्खीक्षया लाय दसदिकक्षय सहिताय ध्या
युक्तकालिकोरुया मूवत वरक्ष ३ गजमर्दय श्वाहि २ गन्धपूष्यधूय दीपने वसे वलिगृह २ स्वाहा॥
ॐॐ वक्रवलि ॐॐ कृष्णकलकषया लाय मूक्षाक्षकक्षय सहिताय प्रक्षालिणी युक्तकालिकोरुया मूव
त वर सर्वसमये वक्राक्ष वर २ मम सिद्धिदहि २ कृत् वर २ मूव २ ताक्ष ममाद्यवल पत्राक्रमाय दूँरुं दूँरुं हां
कां हां दूँरुं दूँरुं दूँरुं दूँरुं दूँरुं स्वाहा॥रागवलिः॥॥ध्रुविलियाजवला लिधूकादूवाला कवलिः॥गल
यतिवलिः॥जांघांॐॐ दवीपूग महावल पत्राक्रम गजमूर्ख सर्वविद्याक्षय कर्त्रं मंॐ मंॐ मंॐ मंॐ मंॐ मंॐ का
नाम रुख वन्त रुमा सहिताय र्मां पूजा वलिगृह २ स्वाहा॥॥ध्रुविलियाखला लिधूकादूवाला कवः
लिः॥वदूकवलिः॥जांघांॐॐ दवीपूग वदूकनाथ पिंॐ गजकक्ष मूकाद्याहाय मूलियाना न्मरुममवि

आनृक ३ मूक २ वेला कृता मत्रा धिय तयं मां पूजा वलिंष्टक २ स्वाहा ॥ थलिलिया खवला कथूला
कवाला कवलि स ॥ कंठ वलि ॥ जांघां खुं कों कों दू कों कों क ॥ स्वस्व न कृता धिय तयं मम सिद्धि यदा रु
सर्व वीर्य तत्र क २ मां पूजा वलिंष्टक स्वाहा ॥ थलिलिया जवला कथूला कवाला कवलि स ॥ यागि
नी वलि ॥ जांघां खुं खुं खुं महा सर्व रु तस्या महा सर्व मा रु स्या महा सर्व गा किं ला स्या महा सर्व नू त पत्नी
स्या महा सर्व कव वी स्या महा सर्व दि कव वी स्या महा सर्व एभ व वी स्या महा सर्व व्या मणी स्या महा सर्व मला
पका विणी स्या महा सर्व वृ पदा यिनी स्या मां पूजा वलिंष्टक १ जां ३ कं ३ रु ट स्वाहा ॥ दवी सद्ध वन
वा कवलि स ॥ राग विद्या ॥ ॐ नमो महामाये कूं कूं वेला कृता न कूं कूं सिद्धि २ जां २ क्ष त्रय २ य ग धन क्ष
न्य वत्त सू वलु हि व न्य दा वा कू उ म्ब महा नि धि सद्धि द दी व महा एभ वी स्मृति महा म धय एभ वी म्ब
रा ग्य सर्व दी य समस्त कर्म कनी सिद्धि याम् ॐ पू वय २ जां सर्व मना वथां सर्व संपदां वर्य २ व र्वा य
य २ पा नय २ महानि धि दद २ अक्षो घ्या दद २ पू ग धन आ यू सो रा हं नि धानं क्षी र्य हि व न्यं दद २ स न

[illegible]

ॐ तिष्ठामहाविष्णुं सुन्दरीयुजनसमायुक्तः ॥ अथ वलिद्वयः । थलुग्याजवलाङ्गथुकादूलाक
वलिः । हासुकलाकायाववलिः । द्वयः । दूमाशर्कः । उंजसर्वपीणयपीणनिद्रावापदावमवयवक
वापकस्य सदाहाः सर्वदिशागसंक्षिताः ॥ १ ॥ यागिनीयागवीरवृद्धाः सर्वतजसमागताः । अर्द्धपर्वमहा
वर्कणाता । थाववदाममः ॥ २ ॥ यरुकाः । गाननयविष्णुव्यादावृत्तवताः । सर्वसिद्धिप्रसादाम्दविन
र्षावत्सदा ॥ ३ ॥ वीरालायागिनीनाः । अथ द्विषन्निमहीतलः । नदलाववलिद्वयः । समयावालमलक
॥ ४ ॥ अतिस्मृतिमनः । पूषिमांगमयाह्विजावितर्कनिकृन्नुयनुदूक्षनायागिनीगलसंकलाः ॥ ५ ॥ कृद्का
दिकृत्प्रानिदून्निर्मिलान्दूरुषितान् । निकृन्नुयनुदूक्षनायागिनीगलसंकलः ॥ ६ ॥ उंकावादिषूयरु
तासुयः । सात्राः । यकार्तिताः । उंकावधीधनुः । सदाहादिसासुविदिगासूयः ॥ ७ ॥ महीयातालवृक्षाः । पुर्व
स्मान्नववृत्तयागिनीयागयूकात्मा । समयातिष्ठनुसाधकाः ॥ ८ ॥ वीरकर्मसूवीरवृद्धाः । सत्यनिकृन्नुद
वताः । सिद्धाश्चयूकावाय्याः । साधकाः । कितिगायितः ॥ ९ ॥ नगववाथयमवा । अद्वयाम्बा । सविद्ययः । वाय

कृपेकवृक्षवाग्मगतमाहमलुल ॥ १० ॥ नानाद्रुपधनान्यपि वटजाविविधनिवतयसर्वत्रसुख
वर्लिष्टकनुसर्वतः ॥ ११ ॥ नत्रलागताप्यरुन्धसर्वमगतलुलपदं ॥ यालवृजन्मयाकर्मयत्कविश्या
मियत्कर्म ॥ १२ ॥ वलिपूष्ययदाननसुखमेमविनकाः सर्वकर्माणि सिद्ध्यन्तु सर्वदाषायसानुम ॥ १३ ॥
निवर्गकिंयसादनप्राक्कारानमाह ॥ वृत्तिसमयवलिः ॥ ॥ थलिलियाजवलालिधूक्काद्वाला
कवलिस ॥ दासुकलाकायाववलिविय ॥ मंथूलंमयार्त ॥ अजमृजत्रयायकंमृग्वृत्तशालसुधेवव
मृदुमूर्तिष्ठलकास्यदुष्मापुमयसूदनः ॥ १ ॥ समूकाऽककायश्चउलापादेकदेखुकः ॥ अत्रावतश्चडा
याम् ॥ डाषधीगसुधापत्र ॥ २ ॥ मृककर्मार्थवाद्गुक्कमलश्चखवाननभग्नमुखश्चिवयणागो रुद्र
श्चलुधनकः ॥ ३ ॥ कुण्ठायाजठालाख्या ॥ मकीवाऽरुद्रश्चत्र ॥ ४ ॥ कयालिसुधावान्यथापूवद्वयशत्रू
कः ॥ ५ ॥ रुद्रकालुर्नटाकान्कसुठिऊसुविलसुधा ॥ दनुवाधनदेष्टिवनागकर्तुश्चयवुवान् ॥ ६ ॥ रु
क्तावावावसिंहश्चरुक्कपीमद्यरासूत्र ॥ यग्नकावीत्रवष्टिवलम्बाश्चावसलसुधा ॥ ७ ॥ पुक्कडुपुख

ये सुर्षिता कामदा सदा ॥ १०४ ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
नवकालामुखगन्धपुष्पवलिपूजायुक्तं ॥ १ ॥ नवकालामुखगन्धपुष्पवलिपूजायुक्तं ॥ १ ॥
नयस्यारु ॥ मनुनातुन सर्वेषां विधिवद्वलितानतक्षनदुर्लभं ॥ २ ॥ नयस्यारु ॥ मनुनातुन सर्वेषां विधिवद्वलितानतक्षनदुर्लभं ॥ २ ॥
यमुदितावाजा सर्वेषां वल्लरुवत ॥ ३ ॥ यमुदितावाजा सर्वेषां वल्लरुवत ॥ ३ ॥
लस्यावलिपूजा ॥ ४ ॥ लस्यावलिपूजा ॥ ४ ॥
कलाकायाववलिविध ॥ ५ ॥ कलाकायाववलिविध ॥ ५ ॥
नूनाक ॥ ६ ॥ नूनाक ॥ ६ ॥
लनिकेलरुतलवायातालवानलवा ॥ ७ ॥ लनिकेलरुतलवायातालवानलवा ॥ ७ ॥
यवकतापूषाविद्याधिकत ॥ ८ ॥ यवकतापूषाविद्याधिकत ॥ ८ ॥

च अलिबलिपिनिनवलियूकाष्टकशमगानिकामखाहा ॥ २ ॥ मांयूजांवल्लिष्टकशमगानिकवृष्ट
 रुष्टखाहा ॥ न्तिगानिकवलिः ॥ थलिलियाखवलाद्धधुलाकवालाकेवलिस ॥ दासूकलाकायावव
 लिविये ॥ सयनमगवर्लम्यात ॥ अंजयावविजयावेव जयनीवायवाजितावनन्द्राजयाही
 माकलाष्टिवामुकास्किता ॥ १ ॥ दिव्यानिमहायानि सिद्धियानिगणेश्वरासाकिनीकालवाणीवड्ड
 कगानिगाकवा ॥ २ ॥ गम्भीराद्यावलीसूलायवनामीदुलामिकाहीवलीवमहानन्दाकालामूवीतथे
 वव ॥ ३ ॥ पिगावीहसिनीयेवयदगाधूजटीतथाविषरुक्षासर्वसिद्धिदुस्मिन्नुतथेवव ॥ ४ ॥ दूंक
 वास्त्रोवीदीयाधूमादीकलहसियामार्तगाकाकदूरीयतथासियूववानकी ॥ ५ ॥ वाकसाद्यावनाया
 यत्रकांगविश्ववृषिणीजयंकवीवीदविरुद्धीष्टकासीनवराजनी ॥ ६ ॥ वीवरुद्रमहाकालीकंकालीवि
 रुताननाकाधवाहीमरुदायवायवंगरुयानना ॥ ७ ॥ वाक्कीववेकूवीवीडीवव्विकाङ्गुवरीतथावावा
 हानावर्षिणीयगिवादूतीवषडिका ॥ ८ ॥ नूददद्यामहायानिवर्लिष्टकनुतसमा ॥ जीवीगठियागिना

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
स्वावलिष्टक २ सर्वगान्धर्वक २ ममसिद्धिर्बुद्धि ३ रुद्रस्वाहा ॥ इति योगप्रिया गिनीवलि ४ ॥
वीसकवर्तवाकवलि ५ ॥ कासुकलाकायाववलि विय ॥ गलउल्लिख्यार्त ॥ ॐ ज्ञां ज्ञां ज्ञां रुद्रयक्ष
वाकसुहृताश्च वनालाक्षयपालकाः ॥ अकिनीवतथामाला पूतनाकटपूतना ॥ १ ॥ यी ० जाक्षयजाष्टे
वर्गर्ज्जासहजानथाः ॥ यागजामनुजाष्टे वकूलजाष्टे विष्णोवत ॥ २ ॥ नानावृषधवावा न्येयागिन्यावल
वक्तव्य ॥ नानादणनिवासिन्य मृत्तिशुक्लसमागता ॥ ३ ॥ समयास्तनयवान् नृथायवलिकाक्षिण रु
द्राक्ष आसवे दिव्यगन्धपूष्यादिरुद्रेषु ॥ ४ ॥ रुद्राददनुमकामान् वाङ्मितार्थददस्वम ॥ ५ ॥ रुद्र
स्वाहा ॥ इति स्वस्त्यनक्षयपालवलि ६ ॥ थलिलिङ्गवर्तवलि ७ ॥ कासुकलाकायाववलि विय ॥ गलउ
ल्लिख्यार्त ॥ ॐ ज्ञां ज्ञां कवर्तुक्क कामवृष्य पूवविपूलगता जालपीठजयन्त्या षड्काणमभ्यपीठप्रियथगति
यूनादविष्टमिदकावाः ॥ आचार्यसिद्धिर्मेध नदनूकलयुग ॥ षड्यागिन्यवृद्धे यूकार्हपञ्चकार्यं उव
लकसहयादवदवीन्नमामि ॥ ॥ यावकावाव ॥ गृन्धवीयथातथ्यं जीवत्यर्थकृतामयाः ॥ नागलाक

पूरवमश्रुस्मिन्महावल ॥ १ ॥ गतेषांतिष्ठतविद्याश्रुविद्यावलदर्थितागतांष्टहीत्वामहादवीं संसा
 वरुयनागिती ॥ २ ॥ इतिविद्यामहादवी य० मानाष्टहस्मिताश्रुवावलातिविद्याता सर्वसिद्धिप्रदायि
 का ॥ ३ ॥ जंयारूदिव्याक्रीक दगदिगिबुवनं सफपातालमूलक्यापोणयपी १० विममत्रुयपथ
 मलकवाग्मगानं सिद्धीक्रीकवृक्षदधधिरुतठ धूमकावावतात्रकात्रयार्थपूरुगिर्यामथत्रय
 वववडाठियानयधन ॥ ४ ॥ जालाखुआगमूखा कुलपतिनगत्र कामवृषस्ववृष उर्ज्यामहहाम
 यदूयतवरुवलाठदगयदग धासेलपालिजातं पधुपतिनिलयहमेविद्यावलष धामाकाम्वा
 ददग सुवपथगिरवत्राकिनीसाकिनीनां ॥ ५ ॥ कासीववावृक्षदग पुविठमलयकवकावाह कुल
 नं श्रीवाश्रुहकादार्क उवसिविव्रजक सिद्धिकयगुहात्र १८ वृथापात्रिजात हिमगिनिगिरवत्र काश्रि
 दगययाग सोवाश्रुमध्यादग रुयपूत्रनगत्रकागलकमूकवा ॥ ६ ॥ काष्ठुठका केलवामगधपूत्र
 ववकर्तुक्कुलि ॥ ७ ॥ वक्तामहं सवाह हिमवजयतल पाटलतांगवाद्या ॥ ८ ॥ श्रीगोहमाहवज्र मूनि

हाहृं कावनादा डलिखाना लकणा मूमत्रयुद्धदया विदुमृद्धिप्रगसा ॥ १२ ॥ कावयना वृत्रूधि
 ववगाखायमाना सत्रावर्जिकायलालयनी लललललललना दावयनापिवनी ॥ १३ ॥ कृष्णकामाखा
 दूती मूमत्रयुद्धनूता विदुनादानलीना गकान्कसिद्धिदामा पत्रमपयगता वद्धितात्रममम ॥ १४ ॥ याग
 कालाकपालागस्यवनयूता पार्थिवनानूयका वकळाविदुयूका कुलकमलवता तावणीकुतुलाः
 खा ॥ १५ ॥ विख्यातावृद्धगकिः सद्यदिगुरुगिर्वहीषतीरुद्धकाली कांकीकं कामवूया मूकलकुलग
 ताद्विद्विर्गुरुद्वयनी सामग्रीकविकारखा वितत्रुयवर्मवामदिव्यलिमाद्यं वामूलाकोलमात्रकुल
 कमसमयकोलिनाककिताखा ॥ १६ ॥ आख्यातावाममात्रयुक्तितनिलया मालनीविदुयहा डंकाव
 मकुलवा मूकलकुलमयायागिवकयुतिष्ठापनाथासंगसमायवत्रमूतिगला वद्धिताहीममूर्ति
 सादवीलाकमाता गिवयकलमूखा माहृणीनाथयक ॥ १७ ॥ धीकणाख्यमाना वदुयूगसहितामध्या
 लिगम्विकाखा पी० ह्यपूत्रयनी वकयकितकलाकोलमात्रादिताहा नान्नायाकविकारखा विषयग

जनवासनायपादुकां॥ॐमयूनासनायपादुकां॥ॐमूनासनायपादुकां॥ॐ(शुभ्र)यसुनदीपद
नदीपदीमहाध्वंकक्षयपालायपादुकां॥वलि॥ॐज्योतीकूलपूवदूकनाथायपादुकां॥वलि॥
गंगीगुंग॥(शुभ्र)कूलग(लघ्व)नायपादुकां॥वलि॥आवाहनादि॥नर्तनादपुगजमूर्धा॥
ननन्दिननम॥ममहाकोलायनम॥वलि॥यांयागिनीनानम॥शुभ्रनामूलायनम॥वलि॥
॥आध्वनकथनम॥अननासनायनम॥कदासनायनम॥नाशुनासनायनम॥यनासना
यनम॥कणवासनायनम॥कलिकासनायनम॥यमासनायनम॥ॐमयूनासनायनम॥
अथध्यानं॥ॐजकोमात्रीयत्रमादवीनीललाहिततजसाजरायूठधवीदवीशुभ्रवाध्रयलम्विता॥१॥
॥विनालवदनादद्यापुर्णवन्दुनिराननासोम्यश्रुकुण्डलदिवादिदि(लघ्व)यलम्विता॥२॥दिशुजाका
महागिन्यादीत्रककनमल्लितामधुक्रामागुतेनवीगसमूनतपथाधवा॥३॥दक्षि(लघ्व)गदादिद्याना
नात्रहविह्वितावामासंगगतादवीवात्रमादाय(लघ्व)ना॥४॥वामावयतिताजयादक्षि(लघ्व)नाना

धियः मयूत्रवाहनादवा सर्वज्ञा सांक्रियाय ॥ ७ ॥ अति ध्यानं ॥ को कामात्री मूलय ध्यान पुर्यां नमः
 उंजं कोणी कामात्री रुद्राविकाये पादुकां ॥ उंजं वंजं मंजं कां कां कूं कूं कांणी महा कामात्रिका विष्णु पादु
 कां ॥ ३ ॥ बलिः ॥ कां दद्याय द्यादि ॥ मयया ॥ उंजं कुलको मात्री विष्णु मयूत्रवाहना विष्णु धीमही तन्ना
 को लिप्या दद्यात् ॥ बलिः ॥ ॥ पवित्रा वयूजा ॥ उंजं मंजुका नाश्रुतिना मंजु त्रवाय पादुकां ॥ उंजं कंमा
 रुद्रात्री वृत्रह त्रवाय पादुकां ॥ उंजं वंजं कामात्री वयूजं त्रवाय पादुकां ॥ उंजं वंजं वीका धरु त्रवाय पा
 दुकां ॥ उंजं तं वा नाही उन्नत रुद्र त्रवाय पादुकां ॥ उंजं वंजं दाणी कपाली गुरु त्रवाय पादुकां ॥ उंजं वंजं
 मूला रुद्रा रुद्र त्रवाय पादुकां ॥ उंजं गं महा लक्ष्मी सहा त्रु त्रवाय पादुकां ॥ वृद्ध वयूजं पादुकां ॥ वृद्ध
 पाये पादुकां ॥ वंजं पाये पादुकां ॥ वंजं नायिकाये पादुकां ॥ वंजं पाये पादुकां ॥ वंजं वयूजं पादुकां ॥ वं
 जं पाये पादुकां ॥ अति वयूजं पाये पादुकां ॥ उंजं वंजं वाजपय द्युं उय वंजं वयूजं मर्दनी द्युं उं सदा न
 कश्चां मांशं सः मृग्य रुद्र नमः पादुकां ॥ उंजं वंजं हां रुं कां कां नमः पादुकां ॥ ध्यानं बलिः ॥ ॥ धिया अलि

१॥ उं ग वं नृ ग मं ॐ कां की कूं वूं कां घा म हा का मा त्रि का वि द्य या पा दू कां ॥ ३ ॥ वलि १ ॥ कां द द य य र्था दि ॥
ग य यी ॥ उं ग क ल की मा त्री यू वि द्य ह म नु का वि स्य धी म हा न न्ना को लि प य द या त ॥ वलि १ ॥ मू थ
हा क म हा वलि १ ॥ आ वा रु ना दि ॥ या नि पि नि खा मूर्धा द र्ग यं त ॥ ॥ रू ति की मा त्री पू जा ॥ ॥ य ज मा न
वि या ३ ॥ लि द्वा य क ॥ उं ग द्वां आ न न्द ग कि रे व वा न न्द वा ना धि प त य द्वां न वा त्मा प्रा तु न्म म ल रु द्वा
त्रि का ये पा दू कां ॥ वलि १ ॥ उं लू ग द्वां आ न न्द ग कि रे व वा न न्द वा ना धि द्वां प त य द्वां या अ र्वा वि ना नि
क र्म रु द्वा त्रि का ये पा दू कां ॥ वलि १ ॥ उं ग द्वां आ न न्द ग कि रे व वा न न्द वा ना धि प त य द्वां
द्वां या प ष्ठि म मूल स्त न रु द्वा त्रि का ये पा दू कां ॥ वलि १ ॥ उं ग उं दं जी यां द्वां मू यां न य रु द्वा न्द
द्वां वा द ये पा दू कां ॥ वलि १ ॥ उं ग द्वां द्वां द्वां द्वां नि खा स व न्द म हा रु रे व वा द ये पा दू कां ॥
वलि १ ॥ उं ग द्वां म म हा का ला य स र्व न रु य म र्द ना य म हा रु रे व वा य पा दू कां ॥ उं वलि १ ॥ उं दं जी
वा ज य द द्वां उ य व पु त्रि प म र्द ना द्वां रु स दा व द्वां २ र्वा मा र्श १ ॥ मृ त्प ह व पा दू कां ॥ वलि १ ॥ उं दं जी वा ज य

[illegible]

टक्र २ स्वाहा ॥ ॥ इति त्वाक्रमहावलिः ॥ ॥ आवाहनादि ॥ युक्त्वा खत्राया निमूर्द्धादन्तयत् ॥ ॥
 तर्पणं ॥ विन्दुद्वयं ॥ ॥ वलिस्त्रयं तसिध्वं आकृतं स्नानं द्वायं ॥ ॥ धूपः ॥ दिव्यगन्धसमायुक्तः ॥
 सर्वद्वयप्रिया नूहः ॥ आद्ययसर्वद्वयानां धूपार्थं प्रतिगृह्यतां ॥ धूपाहारं च गृह्यतां विन्दुद्वयं मे
 रुग्वती ॥ धूपनानेनैव निष्ठायां तर्पणं मन्त्रा ॥ ॥ दीपः ॥ सूयकागमहातजः ॥ सर्वेभ्यो नमिन्नाय
 हं सवाक्कायं नूहं आनिर्द्धीयाय प्रतिगृह्यतां ॥ ॥ नैवय ॥ अन्नमहात्रयं दिव्यं त्रयेषु ॥ ॥ समन्विता
 मया निवदिता रुक्मा टहानपत्रमन्त्रा ॥ नैवयं गृह्यतां दत्वा रुक्मिण्युवलाक्ष्मि ॥ अपमृष्टं नूहं
 वा पत्रं च पत्रां गतिं ॥ रुक्मपूषा नामूलधूपं दीपं नैवयादि संकल्पसिद्धिं वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
 ॥ जायते ॥ त्रिदश ॥ ॥ श्रीस्वाहा ॥ १० ॥ श्रीस्वाहा ॥ १० ॥ ह्रीं स्वाहा ॥ १० ॥ ॥ यन्मिमांसा ॥ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १० ॥
 ॥ ह्रीं स्वाहा ॥ १० ॥ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १० ॥ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १० ॥ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १० ॥ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १० ॥
 ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १० ॥ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १० ॥ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १० ॥ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १० ॥ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १० ॥

लिङ्गोक्तं श्रीरुद्रं नमः स्वाहा ॥ ४७ ॥ उक्तं श्रीरुद्रं स्वाहा ॥ ४८ ॥ कोमात्रा ॥ स्वाहा ॥ ४९ ॥ निर्वाणाय रुद्रका
॥ ॥ जयसमर्पण ॥ युक्तानि युक्तानि फलं गृह्णातां स्मृतं जयं ॥ सिद्धिर्बहुमद्विद्वत्स
दात्वयिद्वित ॥ रुद्रं जयं गृह्णातां स्वाहा ॥ ॥ स्नानं कृत्वा ॥ वियज्य पश्चान् ॥ ॥ स्नात्वा ॥ मण्डलदयकं ॥
कवौ जगत्तयं प्रयत्नवत ॥ ॥ उक्तं मुखं पुमपुलाकारं व्याप्य नवत्रयं तत्पदं दर्शितं यत्तत्तस्मै
प्राप्तुं नमः ॥ १ ॥ श्रीसर्वार्थमपुलाकं कमपदं निहितं नन्दनकिं सुशीमा सुखिन्नायं बहुर्लव
कूलकूलगतं पञ्चकं वा न्यषेदं ॥ यत्वा नः पञ्चकान्यत्पूजयितुं बहुर्लव ॥ ४८ ॥ श्रीरुद्रं स्वाहा ॥ ४९ ॥ निर्वाणाय रुद्रका
मूर्तिं मन्त्रं हस्तं रुद्रकला विन्दुपूज्याम् ॥ २ ॥ वालं कोमात्रवृद्धं पत्रमणिवकला वक्रदन्ती क
मार्गां प्राप्तां यत्पूज्यां नवत्रयकलितं युग्मं रुद्रं सार्वभौमं ॥ श्रीनिशिद्रावतारं प्रथमकलियुगं का
कीर्णवाधिकां नखाम्बेयुगलिखा नवपूज्यमर्तं तन्मन्त्रादिब्रह्म ॥ ३ ॥ सन्तानं गन्धपिष्टं कमपद
सकलं भाग्यं कर्मात् ॥ लघावे मण्डलानि पवित्रमविमलं पूज्यं सहाववृद्धं ॥ आदावष्टदशानं क

लक्ष्मसकलं मण्डलात्कनयूर्ध्वं संस्कारं विक्रमनं यद्युपलक्ष्य कृत्यां पुंसिद्धिं निवाप्नोति ॥ ४ ॥ म (ध)
विद्यामरुमीषसंमनूरुयं यत्पयं स्वाधिकारं संसृष्टं यत्तस्मै नमतं युववर्तुन वरुणा कृजं ॥
५ ॥ ॥ उयासागकिरुगमस्या विपथगतिरूता शुक्रा विप्रकाशं तस्या ध्याता विद्यानं वरकल
सहितं मधुसूक्तं सदीर्घं ॥ ६ ॥ तया जात्रध्वनाया प्रकटितं तिलयदक्षिणे वका (६) ध्याता मधी पुरु
षी ॥ ७ ॥ यद्युज नरुय कृत्युवितं यत्तं विष्णु ॥ ८ ॥ तस्या यकामपूर्यं मदनकलियुतं सर्वसिद्धालयं ॥
९ ॥ ॥ ८ ॥ शिकानाकं समस्तं यत्र मणि वकला लंकृतं यागवृद्धं ॥ १० ॥ तन्म (ध) दिव्यं लिङ्गं यत्र मसखकं विन्दु
वृषयवृषं क्लीनित्या नन्दसवृषं तद्वपुः प्रिमथनं यद्युका नैर्विहितं ॥ ११ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ विद्यातागं यगम्य अनूरुव
विमलं तिष्ठती ॥ १२ ॥ ललाटं उर्व्वार्यं समस्तं स्थितिलयजननी वृद्धा किं चिरुदा ॥ १३ ॥ तत्तत्तत्तद्वदवा
लकूलकूलमया नन्दधामिह गन्ता ॥ १४ ॥ उर्व्वार्यं विन्दु रूता यद्युयय वली सिद्धिदिद्योयवृषा ॥ १५ ॥ ॥ ॥
नित्यं किन्नासूत्रकारुगमूदिनपदा नन्दधामिह सिद्धा ॥ १६ ॥ कूर्चनी ययकामा कूरितव वतनं कूर्चिकाया

नमामि ॥ १२ ॥ सन्तानं मन्त्रमा (र्जनं) अन्वयं न यदवता निर्मम ४ पा ० उं का व सिद्धावयय कार्लिता ॥ १० ॥ नू
कुरुता उहा वासी वृक्षे व क द म क ४ स क ट म वि त पा कं अन्वा य तु ह वा सिनी ॥ ११ ॥ गृहं व नु यूर्वा
कं रु दाम न्वा न रु न व ४ ॥ ग म म म लिका द वी वा म मा (र्जय) क ल्य य त ॥ १२ ॥ अन्वयं य ल्य य यो व म धिका
न नु का की (१) ज न्म व क्क णि वा स्त न्म ति ४ पा का म नू य क ॥ १३ ॥ कार्लिं प्रि वि नि वृक्ष तु सिद्धि (ये) व तु सा
न कं १ तु क्षा र्ह न स्या द व नि या जा ना ति क ला क र्म ॥ १४ ॥ वा उ गा धा व रु द न न्या र्म कू टं क म न्म था १ पू जि ती सि
द्धि र्द रु द् सु नि श्या य नि व द य न् ॥ १५ ॥ ॐ न मा ३ मु तं म हा मा य सु न्म द रु य वा य न १ का कि नी वि
पु द्वा त्मा ना दा श्वा वि न्म मा लि नी ॥ १६ ॥ अ द हा व स मू ल्य न्म अ व ल वि न्म धा नि नी १ म हा क पु ल नी म (ध्या र्ह) म
म (ध्या य) व सि नि ॥ १७ ॥ सा म सूर्या नि म धा स्तु श्या म द्या यी य वा य न १ उं का व वि य हा व स्तु ह का वा र्द्ध धा नि
ली ॥ १८ ॥ वा ला य ग न धा सु र्म अ न न्म वा द य य य १ ह का वा र्द्ध क ला धा व य द्म कि न ल्म मा पि त ॥ १९ ॥ स क
ला श्वा म हा मा य व व द ला क पू जि त १ के क ना दि म धा स्तु म र्म म के क रु दि नी ॥ २० ॥ अ व र्णि त क ला द वि

[illegible]

वित ॥ ३२ ॥ उमनीयामनी (मेत्री) मायाय नृपवाहिनी । हस्तद्वरे नवीयवी सृका । धनरुते नवी ॥ ३३ ॥
पद्मागदधुपसुतुया नृपा ४ प्रकीर्तिता । अमृताश्वा नृपय । पु नमः कायालिनी गिव ॥ ३४ ॥ वृद्धली मम
हामाय नमस्कृतं नवी । धृष्टाकटविशूक्तिता नकाकीरुयातन ॥ ३५ ॥ नमामिदवदवनि मूयगा
यथा नृपिनी । काला मूखी वंगवती उमायवी नमामुत ॥ ३६ ॥ यागिनी वधियायवी (मेत्री) लक्ष्मी ४ मय
सुती । हंसवा । गन्धवीयवी । मम मूखागकिमालिनी ॥ ३७ ॥ काष्ठी मम मूयवी दूर्गाकयोयनी तथा । निरुह्य
किन्नासमाख्याता नकायिका दवायवा ॥ ३८ ॥ वाक्का मम मूयवी वेवका मम वेववी तथा । वावाहीयेवमाह
दीवा मूयार्त्त रुयातना ॥ ३९ ॥ या । गलीर्त्त हिदवनि कलायक मम वित । उद्वीयेव तथा । नयीयाम्यानी
मयवा नृणी ॥ ४० ॥ वायव्यायेवको वनी नृणी मम दददा । यथा गव नृणा काला मूयहामा जयनिका ॥ ४१ ॥
यत्रिउका मकायेव दवी काटववा दूक्ष । तथा काली मूमायवी दवदूती नमामुत ॥ ४२ ॥ रुद्रकाली मरुता
यवी । वा मूयार्त्त रुयातना । महादूक्ष महागान् नमस्कृतं कि नृपिनी ॥ ४३ ॥ रुद्रवस्त्रातिस्त्राहान् दयी

दविक्त्रुषमः क्लानार्थिनमहामाथ एतमिच्छामिवदिह ॥ ४४ ॥ यत्स्त्रिदं प० तस्मात् प्रियं श्राव्यमान
वः प्राप्तिविनिता कामान् श्रीनाम्न वत्सरारुवत ॥ ४५ ॥ इति गिवग किं समत्रसत्तमहामायास्तु
समाय ४ ॥ ॥ धिम्भश्चात्र कर्कशं किनिकिनिववर्नं किं किनीमालजालं दधुर्माकुलरावसकलविमह
नं यावहस्यवनादं सूचकं सिंहनादं वनवनवनवनं वव्वनं वामनतर्लूतयताविनाथं सकलरुयह
नं कृतपालनमामि ॥ ४६ ॥ वक्राम्बुवकलितपीम्भजकलायं कालावलीजठिलदधुधनप्रवर्णं सूच्याद
याञ्चनकावलर्णं गोमयीं गोवीसूतं वदूकनाथमहं नमामि ॥ ४७ ॥ हन्तं वददं दृश्यं समितरुवरुयं स
र्वविद्याककार्यं गंगोगुं गैवठं मंगलगतिगतसिद्धिसर्वार्थकार्यं ॐ हूं मूढागजाख्या गयधवन
गतआख्यानैकसंस्तु ॐ क्रां क्रां हं गंगेदिनदमुखगले विद्युताथनमस्तु ॥ ४८ ॥ ॥ इच्छायां नी
क्रियासासूत्रववर्णमिता साधियामहलाख्या सागोत्रीसावदूर्गहगवतिमूरुगमाविं वर्मकोमूला
सावकासावस्विहू ४ यरुगलसकला रुववीक्षयपाला सानकानकवूपा विविधगुणयूतायागिनी

हान्तमामि ॥४२॥ वामूलावत्रवमुधवली साहीमलीयासनी सादूलाचिंतखद्रमर्मरुलकं गकिं
वमुधुधुगं पागंतामत्रहिप्रियालधनूर्यं कृयाक्षीनिधिविगीता नंदवीगततत्रमामिसिबसाहीतालि
रुयनागनी ॥५०॥ ॥ दुकात्रानृयपादाहसकमलकुजावाधवध्यात्रिलिं (ग) वायूयायाजिनाक्षी ४
गलिसकलनित्रा विन्दुनादादयूक ४ नियोगक्षमूक्षनामरुयत्रमकलारुत्रवामनुमूर्ति ४ पायाद
वानमात्मा सकलयुववना रुवव ४ यी कजंग ४ ५१ ॥ वक्रानीकमलन्दुसोम्यवदनी माहृष्यलीलः
याकोमात्री विपूयपासासनकत्रीवकायूधवेकवी वावाहीयनयात्रययत्रमूखात्रुद्धीववकायूध
वामूलागलनाथरुत्रवगलात्रकनुममाहका ४ ५२ ॥ मध्रुतिआसनसु मयमूदितमूखावजयय
सूदीका वक्रान्यायष्टययष्टनदिगयलत्रपाप्रियागमदिक्षययूकासाविंगका (ग) वसप्रसरुसप्र
वजगृ (म) सुत्रकि साश्चाविंगामिुरुदा ४ कमययमहिता ४ पादुदाविंगवर्णा ४ ५३ ॥ खड्गवामनु सि
दिप्रययूत्रविगनंखगतिनात्रनमा नम्रसुसुत्रिपूना वलिपालितजयं रुमूनसर्वविद्यादीयाय

अथ कवित्वं निधिवसयुटिका पादकां कामसिद्धिं सर्वां नूनतान ददन्ति मूलिपिनिन वता रु व वला
 नूनकां ॥ ७४ ॥ आमात्र का विनया सुनरु वलमिता मरुमार्त गेगामि विन्वाही या नून या युथूत व ऊ
 यना मखना वलसा रु ॥ दवा (सिद्धि) सुला रु व व व व सुसुम व व व व कंग रा व सामया रुडिका स्वा वि
 त व तु न व सा ज्ञान दिव्योद्यमा र्थ ॥ ७५ ॥ वधू क श्रुति सुन्दरी विनयनी सिंहा मनी सुन्दरी सर्वथा
 मिह सर्वग करुणी नी पुक्ता मववा रुषिता यस्या दृढ गया लिय द्म विमला वाक्शरु लार्थ सुदां ताम्
 न्द महिषा सुत्रय मथनी दुश्चरणीनी श्रु ॥ ७६ ॥ काकाग ॥ कंगमी वल ॥ कदहन ॥ काप ॥ कविश्वरु
 वा कवका कजना दन ॥ कजुजग ॥ कन्द ॥ कदवा सुवा ॥ कल्या नाल रुटी न ट्यु मुदित ॥ आसिद्धिया
 गवर्न कीजना टकनायका विजयत दवा महारु व व ॥ ७७ ॥ महाकालं महावीर्यं महाकृष्ण ऊर्ण
 यशः सुल्लूयं महाकार्यं कर्त्तुं काया लक्षवर्क ॥ ७८ ॥ खड्ग रुट कधर्व दर्व विनयं कालनय रुं ॥ नमः
 सुमु महाकालं गुरु सहा वका वक ॥ ७९ ॥ मार्क प्रुथा विषय दूय रुता नूय हा या वता व यक यस्य य

वरु क र/ ला वरु नी वरु रु ना ॥ ८० ॥

वृक्षकत्र(लावकवीवक्रकल्य४१देखाकृदप्रमृदितसूत्ररुगर्हप्रकाशासायंदवाहवदुरुवतां
अयमंत्रलुकाया४॥३०॥यादवीमधूकेठरुप्रमथनियानुमृतादिनीयामायामहिषासूत्रय
कत्रीयात्रकवीजाप्रयायासाधुमुनिमुदेस्यदलनियादविदेवाप्रयासादवीममलकदक्षिण
कुजेष्टुजीजयात्रकृ॥३१॥॥उत्कृतावृजकलुकायत्रिगताष्टासिद्धिलक्ष्मीयत्राकयूत्रकृष्टिक
दूकदधवलानि४॥गवयागायहा॥संसारार्धुवदृ४खपंकदहनीनिष्कम्यनैश्वदाष्टीमत्य४॥मूखा
मृजादगुजायतहिगायाहुन४॥३२॥सिद्धिपत्रायत्रमयीवितनाहुदवीया॥गवमनुजननीमनु
लयरावा॥गानोमिमातत्रजमायत्रवाधधर्माविश्वसुहादतिमिलामिरुसिद्धिलक्ष्मी॥३३॥आणा
यूत्रिलियापहात्रिलिजगदृ४खीद्यविद्यावलि॥कालात्रिलिवैत्रिमात्रिलिसदासंसारमाहात्रिणा
॥अयक्तात्रिलिकात्रिलेखत्रयत्र४यागाशर्मत्रात्रिणात्रिसयानितत्रामहीवृरुलदाष्टासिद्धिलक्ष्मी
दूम४॥३४॥खोटयगाधिवृष्टाहुजदगकयूतायंयवकांविनर्तावक्रयर्किविरीयप्रकटतत्रमथा

कृतवाचवसनीं पिण्डमिन्द्रपुत्रा ममृतमयतनू विष्वक्कर्णपवर्णा नोमिष्या सिद्धिलक्ष्मामरिम
तरुलदां सुलवृषं दधानां ॥ ३७ ॥ यक्षयता धिबूरां सुटिकमनि निरा यक्षवकां जिनर्षां जेलाक्षमा
हयनीं कुजदणकयुतां दिशवश्चावृतामी वामकाया लघूलंघटवत्र दमहा पाणमूर्धुं वहनीं द्यौर्णा
खदाम् खद्वारुयनृति सरितां सिद्धिलक्ष्मी नमामि ॥ ३८ ॥ गालक्ष्म्या यतिदहया गयत्र मानन्दानवि
न्दा रुवा नामात्र त्रिनामनि ४ खलूमहा लक्ष्मी मर्हामर्हलं मध्वग किपया धर्वा विरुवर्ता लंकात्र सद्य
धना स्थन्दुवन्दुकला धना गुणत्र सा प्राकालिकाया गिनी ॥ ३९ ॥ मामासूवीज विमलन्दु विरातलक्ष्मी
दवासूत्रा दिनमिता वित्र (७) बूरुक्ष्मा ५ पादात्र विन्दुरुवरुक्कि कृतार्थ सा वां दवी नमामि वत्र दौजयसि
द्धिलक्ष्मी ॥ ४० ॥ निवसति कनवीत्र सर्वदा यागमगाने विनतजनहिता यथन वृद्धा धिबूरां हिमक
त्र हिमगुर्जा यक्षवका क्षमाद्या दिगुदण कुजाम सा प्रियं सिद्धिलक्ष्मी ॥ ४१ ॥ उसावाक्षरुवा यता वि
जयतं संपूर्ण कामपदा ससावाक्षुवधा तरा वयत्र मा सर्वा हि रुद्राणि वा ५ सा सर्वनधृता कुमकुलगता

सानन्दसिद्धिप्रदास्यं श्रीकृष्णाय नमः । श्रीसिद्धिलक्ष्मीयवा ॥ १० ॥ मायावीजयत्रयवात्मकक
ला मायामयीमालिनी मायामारुमहेश्वरीमलिकूलमुक्तारुलादामरा मायासिद्धिमनीषिमानन्द
दयायोगप्रतिष्ठाविधमन्त्रावाधनमस्यप्रसन्नकृपया सारुषसिद्धिप्रदा ॥ ११ ॥ श्रीमन्मङ्गलकलन्दूरा
नविमलाश्रीकामगान्धिप्रदा विद्यात्मारुत्रितैकविश्वजननीजयप्रदाधामिका कावृन्नामृतवात्रि
णाष्टविगर्तलाकप्रयंशिवती कालान्मृदुदयवताविजयतं श्रीसिद्धिलक्ष्मीयवा ॥ १२ ॥ श्रीकावाद्
त्रितीयनागनकत्रीविन्नाधनेर्द्धितं कर्णकात्रितसानूमाविन्देविधक्लानतवाक्लानजं धर्मश्रीकृप
याप्रयत्ननवतीपुष्पायवात्मात्मिका श्रीसिद्धिपत्रमायवारुगवतीनिषासदायागुर्मा ॥ १३ ॥ श्रीकारं
सृजनकवाक्ककत्रलोऽसंसारकलीपवाखण्डनरुमंयुतं वगिखयानादात्मिकानादतां निषानिर्वि
षयानिर्वणवममा रावानूरावानही सर्वक्लादियुलेश्वरीविजयतमन्त्रेश्वरीमारुका ॥ १४ ॥ वृडावृष्टय
त्रयवात्मजननी श्रीसिद्धिलक्ष्मीयवा वन्दानकविरासदाधिकवली सिद्धिप्रदावाधिनारणागणमुध

मूलमूलयुतादिकालिविधमिकासयथाकबूलासमीरुगवतीर्वासविताहंसव॥१७॥युक्तादा
वृक्षमूलकलरुवनविशुद्धमालाद्यवोक्तमालामलाकरोयायकटयतिवयू॥सायूधसांगरुतं
सारुय॥सायूधमोसमवसकलयाथाठगानसमासुविद्यावाहीसदाव॥सूत्रयवयवद॥याकथमि
द्विलक्ष्मी॥१७॥॥काटीनूयुतिदीयमानकिबलांशलासुविकारुनी॥वृद्धनायिधृताप्रकावमदि
युक्तानाविलालयांसमायामितिहृदिमंदतिकनीतीवयगाथाकलांतावन्दनयत्र
खांतीसिद्धिलक्ष्मीमहं॥१८॥॥यउच्यतेयत्यर्थविषयतल्यतिष्ठितंरुयमंक्ष
त्यराधितं॥१९॥सकजन्माजितंयार्थकूर्चलदलातक
रुवत्॥२०॥वावाद्यावलासायल्लानसिद्धिलरुध्वंश्रुकालेकालसमनंसेवलाञ्छावलाध्वं॥२०
॥श्रृंक्लस्ययरावनसर्वजीवावणीरुवत्निधधेनमहादविद्वस्तस्यनविद्यत॥२१॥द्वित्राद्या
वलादविद्विवाकजयमाश्रयात्॥एकयकृत्वायुजयरुवानावर्षसंश्रुक्तं॥२२॥तस्यपूर्यरुलंदवि

संख्यां नैव सञ्ज्ञताया विविधमप्यूर्ध्वगया जयद्वर्तुलककं ॥ ८३ ॥ रे ववा सो न सन्दह ज्ञानसिद्धिं
लरुध्वं ॥ दक्षात्रस्य नयानि मूलबालिमिवानल ॥ ८४ ॥ निगायाहु जयन्मनु बलिहामपूत्र ॥ स
र्वं आकासिद्धिर्न वन्नुनं वर्षमायान्नसंगय ॥ ८५ ॥ सत्यं सत्यं पूनः सत्यं सत्यं सत्यं नगमस्यजं ॥ आका
सिद्धि कवीया का प्रयोगं कामदं यत्र ॥ ८६ ॥ कलो सिद्धि यथा गन्धन वृथा विरुली रुवन ॥ दक्ष प्रत्यय
कालीयं कूब्रघ्न दद्या प्रियं ॥ ८७ ॥ वितायां साधयद्वा पि न ववा साधयद्दुरु ॥ असाध्यं साधयन्नुनं नि
गायां बलिदानतः ॥ ८८ ॥ आकासिद्धि कवी विद्या कूब्रघ्न दद्या सदा ॥ तस्य कर्म प्रवस्था मिनागामयन्
विस्मित ॥ ८९ ॥ ॥ ॐ का ववृषां हि मणुज दहं यश्च न नां यश्च दगायता कवि विराजमानां दण्डिः कवा
वै ॥ ९० ॥ ॥ ॐ वाज वृषेर्जन दहत्संस्तु मानद्व वृषेर्निवा सयुक्ता ॥ वि
विश्ववत्तारु वला हि वामां ॥ ९१ ॥ ॐ का वना दहं न देह दयां बुद्धेन्दु
वृजामनिष्ठ दयादां ॥ ९२ ॥ ॐ वमनीयवतां ॥ ९३ ॥ ॐ सिद्धि लक्ष्मीं प्रणमामि नित्यं ॥ ९४ ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥

प्रियुगात्मवृषां सुखिस्त्रिगुणयवना धरुर्दुःखानिर्मयीदोतदयादुविहारासिद्धिलक्ष्मीं प्रलमा मिनि
 र्ण ॥ १३ ॥ सुंकात्रवावेऽसमवसूना गीन विदोत्रयनामतिरामवृषां सहप्रवालाकसमप्रकाशां
 प्रासिद्धिलक्ष्मीं प्रलमा मिनिर्ण ॥ १४ ॥ कौंकोरुयनां सुवदेत्यमयानि न गतुकन्यां न वयोवनाद्यां स्व
 आदिगमेवतिदाश्रमातां प्रासिद्धिलक्ष्मीं प्रलमा मिनिर्ण ॥ १५ ॥ कामोहवृषां सुवतययानां विन्वाधवा
 सस्मितवावृदनां यथाधवानमुतनूं सुवर्णी प्रासिद्धिलक्ष्मीं प्रलमा मिनिर्ण ॥ १६ ॥ नवाधवाजां गनि
 रुंरुवां रु केषु सनार्कवरीतिरुर्वा खेलाश्रुवयां सुववृन्दवयां प्रासिद्धिलक्ष्मीं प्रलमा मिनिर्ण ॥ १७ ॥
 माकैकसद्वामवविन्दनया मानन्दकन्दमेमवां ववाद्यां गत्री वराजां दयादुर्मर्षां प्रासिद्धिलक्ष्मीं प्र
 लमा मिर्ण ॥ १८ ॥ रुत्रिरुवमुखययानिः सृती सिद्धिलक्ष्मीं सुवमिममतिउर्वाजितं मनुवाऊं ४ य
 र्णतुवि सदायः कीनविलापिमर्षः सरुवतिनवनाथः सर्ववाकन्दसद्यः ॥ १९ ॥ ॥ इति महावाव
 तनुं नवाकवा महिमास्कार्यं समाप्तः ॥ ॥ जोगानिकाग्रिकुरुवाहितरावसुवृषां सामाकवक्रिप्रियथा

दलमध्यासंस्तु विवृतविरुविषयाख्याविलानरावास्तुष्टिस्तितियलयकावगततत्त्ववृथा ॥१००॥ हानात्
मिकासकलरावविहावलिनाआनन्दनन्दितयदायवमार्थलीनानाठीकलाकलितवियहमनुवृ
थासकदगाकवगताखलुद्धिवर्णु ॥१०१॥ विद्यासताकववनाकलकर्मवप्रापेलोक्षलपठवनाक
लसंयसिद्धाएकाकनकगतिवकववययूयाससंगसिद्धववरुववयुजिताया ॥१०२॥ कालीकला
कलितकालकलामिवाहाप्रावकवकनिलयानवरुदहिनापूषुगगाकेकलिताकलरानवृथावि
हानसिद्धिववविकिकलयसिद्धा ॥१०३॥ आलवखवववयवायवमयवप्रावककमगदितमनुमहाथ
वदाससंगसिद्धिनिवर्ताकलसिद्धिदाडिस्वारावरावितयवायलमामिकाली ॥१०४॥ जावदुरुगति
नावविगगिदहनगमववपुववुदहनारोकेवकेविदहनकुरुवदावगान्कवसंस्तुस्तुष्टिस्तित्य
ककलीअकलकलयुगासर्वसमाधधुतांकाकालानिमित्तंयवमयदमयीसंवितानन्दवृथा ॥१०
५॥ ॥ उदस्येवसवासनस्यदधतीमध्याललाटपरामोक्षाकानिमनूष्मगविवसिन्नस्यातन्वतीसर्व

न। प्रवासे विप्रवाह दियुति विवाह्या। ग। सदाह। स्मिता द्धियान्नः सह सायदे सिद्धि वर्यः कतिर्मयी वा
मयी ॥ १०७ ॥ माया कुलनी क्रिया मधुमती काली कला मालनी मार्तण्डा विजया जयारुगवती द्रव्याणि
वागा मृगी गङ्गा किं संकन वल्लरा विनयनी वागादिनी रुद्रवी जीका वा विप्रवाय नायन मयी माता क
मात्री लक्ष्मी ॥ १०८ ॥ मंदस्मितान्तरित मंशुकपाल मृगी प्रालुंगघीन कुवरा वनमला मं। वन्दारु
वकुललिता कृति सन्निवर्णा दर्वारुजा मिव वर्या किल सिद्धिलक्ष्मी ॥ १०९ ॥ सिन्दूरपूवतिलकानवयो
वनाद्यां सस्मन् वक्रकमलामिह दवमान्यां काव्यसागर समुत्थित कल्पवल्ली मल्ली विनाजित कर्वा
प्रलमा मिलक्ष्मी ॥ ११० ॥ श्रुतिदिवगल वन्दितयादयद्यां सद्भाकृता मलययाजनिवा सन्निध्यां संसात्र
माह कदनस्य निदानरुतां वन्द कर्त्रेण नयनां धनपूज्यदायी ॥ १११ ॥ मान्यां शिला कजननी खलु विष्णु
पत्नी मारुतुका टिकि वर्या कुलवर्मा गभ्यां दानिद्वया सिद्धरुना मृतदिद्युधर्वा वार्यानि धनिहसूता
कलय वलक्ष्मी ॥ ११२ ॥ यं नाननां दुहित सन्निरुणु उदरा मङ्गा जयय सह सेनयने श्वयुक्तां रय्याधिक

द्वर्गारि त्रमूजसादवास्यां यद्वालयदगुरुजां युलमामिनिर्त्य ॥ ११२ ॥ उंकात्रवृषसहितां कठिलालका
नां मन्दात्रपूषकलितामलहात्रवम्यां दकां सुगाहितमुखीमपिसिद्धिलक्ष्मीं वन्दे ॥ ११३ ॥ लज्जाकवोजललितं किल कूर्चवार्जं यथा निषधकलितं वननाववीर्जं ॥ सर्वैर्बुधः
युतमिन्दुकलावर्तयं सिद्धिपदं सुविदितां गृणु वीजमन्यत ॥ ११४ ॥ मनुष्यामूर्द्ध्ववृत्रिर्नयनेर्वनिधाय
वेन ऊयन्नेपववानमसाहियूकं ॥ लक्ष्मीं ४ स्त्रिवारुवहुतस्य गृहं नृत्तिर्त्यं वा ॥ यदवतावसतितद्वदना
त्रविन्द ॥ ११५ ॥ मध्याधिकालमहुकालकृतागवृत्तं वाक्चवस्य दलमष्टदलेष्टयूकं ॥ रूविम्बमूकमहु
लं किल सैयुतं न दीध्याकुनपितकर्तव्यवचकमतत ॥ ११६ ॥ दानेष्टुर्लित्रहि ॥ गारितमद्वितीयं तदा
ककणुरुकर्तव्यवचमकं ॥ गतुन्दुवद्विमृशदिकतिवृन्दमाशुं पूर्वदिनप्रसूयदं यत्रिपूजनीयं ॥ १
१० ॥ कृष्णार्त्तपूनर्मध्यासिद्धिलक्ष्मीं यदवता ॥ पूजनीयात्यजत्रनसाधके ४ सिद्धिकांक्षिरि ॥ ११८ ॥ द्वा
प्रमूदक्षिदिनिप्रयतं न पूषा ४ धीसाधकनगलयप्रमूषा ४ सूना ४ दक्षिणपूर्वसहिता ४ किल सर्वव

व्याख्या नार्थजनकाश्चल्यपश्चिमत्र ॥ ११९ ॥ श्रीरुद्रवन्दुवदूकादिगणाः समर्था निर्यधनगदिनि
नाथयदानकयूकाः ॥ यागिन्याधिष्ठितमूर्खाः ॥ यत्रिवावर्मद्याः ॥ पूर्वसदादिनिजवाजसमन्विता ॥ १२० ॥
मान्याजनस्मितकवाः ॥ पूर्वकृतवीथ्यामीनानताः ॥ निसदनानकसमीसूत्रम्याः ॥ श्रीवीत्रनाथदणकन्द
वलिष्ठनाथग्रीमकूयदधवत्रामन्त्रिवायमध्याः ॥ १२१ ॥ कंकालदवसहितान्गुरुदकवीथ्यात्रयाम
तंगतनयान्गुवत्रागद्वलीं वीत्रावलीमिरुद्रवक्रिष्टहादिनाथसंयुजयन्निखलतंहितत्रयधन्या
॥ १२२ ॥ यकजलाधियतिस्त्रुद्रववीथिकायां कथादवन्ममुखतानिद्यतंसुसिद्धाः ॥ वतालखड्गमन्
लभयनसिद्धिरूपा रूपापर्वद्विष्टवनादिस्त्रुद्राः ॥ सुदृष्टाः ॥ १२३ ॥ संयुजयद्विरुधनाधियवीथिका
यां सिद्धान्तुवावकुलस्त्रुद्रवपादलनान् ॥ निर्यधरुजनगृहादिनितानकत्रयानानन्दनाथसहिता
नवत्रयकमुखान् ॥ १२४ ॥ व्रीणादिदिक्कृतमूदायत्रियुजनीया ग्रीर्जरिनीसकलवीक्षितसिद्धिदायाः ॥
श्रीरुद्रिनीसुविदिताकिलमाहिनीसा वाकर्षिणीसूत्रनूतावत्रसाधकन्दे ॥ १२५ ॥ संयुचिकाकमलसं

रुवगकिरुता वाक्की सवाऊ वदनाखल पूऊ नीया ॥ १२३ ॥ कंयूचिकाखल मरुगवगकिरुता माहग्वी सुविदिता सूत्रवृन्दवः
कलसाधक वृन्दमुखी ॥ १२४ ॥ कंयूचिकाखल मरुगवगकिरुता माहग्वी सुविदिता सूत्रवृन्दवः
न्या ॥ सूऊ सवाऊ नयना नूना हि साधक गले ॥ १२५ ॥ रंयूचिका सूत्र
नूता वरुव वल कोमात्रिका हि गिषिवाहनगकिरुता ॥ १२६ ॥ रंयूचिका सूत्र
लहिखल साधक वृन्दमुखी ॥ १२७ ॥ रंयूचिका हि गनूजा सनगकिरुता पूछाहिने सन दलखल सा
धकोय ॥ १२८ ॥ रंयूचिका सूत्र मल वृन्दव न्या ॥ १२९ ॥ रंयूचिका सूत्र
प्रवित्रिश्चि नूता सूत्रका वावाहिका निखिल मंगल दसूदहा ॥ १३० ॥ रंयूचिका सूत्र
मिषस्य वदल पत्रि पूऊ नीया ॥ १३१ ॥ रंयूचिका सूत्र यत ॥ १३२ ॥ रंयूचिका सूत्र
वृन्दव न्या ॥ पूछा परुऊ न दल वत्र सिद्धि संधे ॥ १३३ ॥ रंयूचिका सूत्र
यूऊ विनाग दका वामूठिका सूत्र गले कनूता सूदहा ॥ १३४ ॥ रंयूचिका सूत्र
को वत्र यदल लित खल पूऊ नीया ॥ १३५ ॥ रंयूचिका सूत्र

मूनिवने० किललीयलन ॥ १२२ ॥ गंधर्विका निखिलवांचितमिद्विदायी संहारुनेत्रववत्रलसर्मसू
 वक्राच्छीलदलेहियतगधियथानगकि० पूष्पामहादिकमलाकिलसाधकन्दे ॥ १२३ ॥ अर्थाविराव
 सूदलववखड्डरुसापूर्वादिता निखिलमनुजनेकमान्या ॥ अर्थागिबोरुगवतीतदननकवञ्च ॥ माया
 मरुणदयितासुखदांनूदा ॥ १२४ ॥ साकिनिकिनीसूककवीविमलातथात्रयाकायमस्यवगनाकृतवे
 त्रिरुद्धा ॥ एतरेववनगदिताकिलतल्लवक्क कर्षिन्मसावमलर्यकजुल्लदहा ॥ १२५ ॥ यथादनीयमू
 दिताखल्लवात्रमाता ॥ एकिंकीलीकमलसाधववात्रवक्रा ॥ एकाकिनीतदनूतल्लदहागवृल्लतात्रय
 र्यदहनतल्लमिदंयपूष्प ॥ १२६ ॥ अर्थादिनष्टदयादिषष्ठंगसंया ॥ यथा मनाहवतनसंभ्रकोणः
 वाक्क ॥ काणेषूषधूनि यतंखल्लवकुल्लु ॥ पूर्वादिता निखिलशामेवतनु ॥ गाय ॥ १२७ ॥ एताकिनी
 तदनूनाकिनिकाविषुद्धा ॥ एलाकिनीविकटमूषधवाप्रयुता ॥ एकाकिनीविविधवर्चितनकुवृन्दा ॥
 साकिनीयत्रमहाकिनिकाप्रसिद्धा ॥ १२८ ॥ कोमात्रिकाकुजगनायकवासवीच ॥ रूपालगकिनजित ॥ स

दननयूकाः। उर्ध्वसूक्ष्मकत्रसूखलुयूताः। कमनः। पीदाकिनासहितरीषलगाकिमन्त्राः॥१३९॥ ऊर्ध्व
कनकमलारुवगकिरुगाजालंधनलसहिताखलपूजनीया। यथासनाब्रह्मसूत्रवृद्धनायासू
ऊर्ध्विका। लललितस्यवदकका। ॥१४०॥ यूर्ध्वयूर्ध्वगितिनासहवामका। ल। पूषासंघानृपग। लेश्व
गयानलकिः। यथार्थिसंघविनिपातनकाविनासा। यवद्वृद्धयत्रिसवितयादयन्मा॥१४१॥ काणाय
कहिविदितं किल कामवृषं। ब्रह्मस्यगकि सहितयत्रियूजनीयं। कांयूर्ध्वकं निखिलदृष्टविना। गदकं
निर्हयसाधकग। लोर्मननादियूके॥१४२॥ उर्ध्वकः। सूविदितः। यत्रियूजनीयः। डाशानयी० ललि
तायत्रिसिद्धिदयः। सूऊर्ध्वनायवववववसाधकेषु। कथं। यत्रिदलपूगववद्वनीयः॥१४३॥ म
स्यार्थकुलधनं। उठिलं। मरुणं। कथाधियं। त्रिदलनाथनूतं। तदूर्ध्वं। मनुं। यऊं। दखिलरागसूक्ष्मवर्धितं
विनामर्लितनूरुतामद्यमलुलायं॥१४४॥ आदीशुर्वकलयनावममनृपाली। सिद्धिषट्पदविविधमन्त्रि
सूखाकर्तव्यं। आदकिनीं। विकृतसंगविनाजमानां। यद्यार्धलघनगुरुरामपि विन्दुयूकां॥१४५॥ धीया

मिनीललिगलं सवला नूजा घृ संकष (लन सहितान् किल नादयूकान् सन्तान वैरुवकर्त्रं मनूर्मन
मायं संपूजयद्यक रं विरुथानिम (ध्या ॥ १४३ ॥ स्मार्तं प (० द कुल रुकिरु नाव नखा य४ सत रं समति
नात्रयि रं मनूष्य ४ पूजेदने नखिल रुकि वने प्रसायं निर्यं विरुति रुवन सहि ग कु कुल ४ ॥ १४४ ॥
थायवां दू ४ ख रुनुं सकल सख कवा सिद्धिलक्ष्मीं समर्प्य प्रोत्थायूष्य धूपे नगलिन विविधि ४ पिष्टके
ध्या नू मिष्टे ४ स्मार्तये त नृपाणां त्रिपूकल समर्पं सिद्धिदं साधकानां रुक्मा निर्यं प (० स प्रियमति सत्र
सां निर्मलां पय्यति डाक ॥ १४५ ॥ ॥ इति श्रीमन्महा राजा धि राज त बलि कुल कीर्ति गंग रुगी प्रथा यमा
न नृ पति वन्द वीदित ये न ल क म ल धी धी समति ऊ य गिता मि न म न्द्र द व वि न विं या सिद्धिलक्ष्मी य नु म
द्रा द्वा वा दि स्मार्तं समा फ ॥ ॥ नमस्कृतं द व द व नि सिद्धिलक्ष्मी म हो ज स य स्य मि न म ला द वि न अ ल
लं क्ष्मी न मा मु त ॥ १४६ ॥ या गि नी या ग नृ पा द क नृ ला म य नृ पि नी सान कान क नृ पा द मा रु का रु क म धा
मा ॥ १४७ ॥ जगत्मा तं वी द वी जगत्सू ह न त क ला त् जगत्सु ति क वी द वी जग दान न्द्र का त्रिणी ॥ १४८ ॥

विलासजननीयवा वक्रिचक्रसमध्यागमयद्वालावाहययात्रवदुर्ध्वसमायुता ॥ १७२ ॥ सिद्धिल
क्षीमर्हणानि वक्रयंजत्रवृषिनी हिमकृष्णसंकाणापुद्गसुटिकसन्निहा ॥ १७३ ॥ सर्वस्वतनिराद
वीकालत्मानसतजसा जगत्तद्वसंयुक्ता नीलकृष्णमूर्द्धजा ॥ १७४ ॥ विनयपतिमाश्रिता दशदा
र्द्धलुधात्रिणी स्वर्दागमिणी नृधृत्वा वर्ययथाश्रयदक्षिणा ॥ १७५ ॥ कार्यगुलं वयागम्य शूरया मूषुवा
मकं सर्वालंकात्रसंयुक्ता रुमंत्रतादिलंकृता ॥ १७६ ॥ पुष्पावसुयनीक्षना मदिवातनन्दवतसा वृद्ध
संधसमानुध्वानुदृष्टिकसन्निहा ॥ १७७ ॥ एकाग्रप्रविनयप्रखलपुद्गकृतगणप्रवक्ष्यवदुर्ध्वसमर्ह
णानि दयहसकृताञ्जलिः ॥ १७८ ॥ यता सनायत्रिस्तुतुवक्रवर्धुमहाजसा काटियुपुद्गलादवीकाल
त्मारुणुनजसा ॥ १७९ ॥ नानावृषधवाधवी नानासमुद्रगारिता वक्रवक्रावक्रकुजा वक्रयादामहा
वला ॥ १८० ॥ विष्वक्पुष्पमर्हणानिलक्ष्मीवृषावतात्रिणी विन्नामलिनिरादवी विन्निगार्थकलप्रदा ॥ १८१
॥ नमः स्वाहायवीषद्वर्द्धकाववमृत्तुक ॥ एतमन्नामहादवी मन्नुवृषावतात्रिणी ॥ १८२ ॥ आधवमुक्ति

गायत्री रुक्मिणी कृतिः सूर्यकुलनाम किं वगम्यागमत्रात्रिणी ॥ १३३ ॥ गन्तेऽगन्ते यत्रात्रात्रात्र
काकुदात्ररुदिनीः अलिमादिमहासिद्धि विद्धिसिद्धिप्रदायिणी ॥ १३४ ॥ यश्चात्मापि तु संयुक्ता वा अल
क्षप्रदायिनीः लक्षार्घ्यं यतद्वीयाय कं यत्र मध्वरी ॥ १३५ ॥ सुलभूया महानि नवव्यादिना तद्वयं
सफादणमूनवमं सफयश्चागुक्ता ॥ १३६ ॥ एकाकं न महाद्वी सुलभूया यतं नमः ॥ एतमनु
महाद्वि मनुमातमं हं ध्वरी ॥ १३७ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तं प्रायनात्राय वद्वि नक्षत्रा यका रुवद्वीमा
मदात्मलगा ऊद्वत ॥ १३८ ॥ सफसागत्रयार्थं नार्थस्त्रा नं सकृत् रुवतः सकृत्स्मृत्वा दहलक्षी पापो
यस्मिन्नागिवत ॥ १३९ ॥ हत्वा जगदिदं कृत्वा बुद्धि विद्धिः ययुश्चतैः मा हं ह्यपि हं ह्येव बुद्धि हं ह्येव
हा तथा ॥ १४० ॥ नोऽपि दित्यादि कं पार्यं सकृत्स्मृत्वा यथा च यतः निर्मथं यः यः १० त्स्मृत्वा मक विरु समादि
तः ॥ १४१ ॥ वक्षनाम्नानायाया निगच्छन्ताना निवः नो वा संकेटयन्नालि स्मृत्वा यत्मा यत्मा सदा ॥ १४२ ॥ अ
नोऽपि विषमयात्र सिद्ध्याया रि संकेटः विषमगहनं वक्षो हत यत्मा यत्मा कुरुय ॥ १४३ ॥ यत्नमनुनादिद्व

पुत्रं यन कृत्वा विना गयत् कुलिकनापि दुःसह्य विषनासन र्हरव ॥ १०४ ॥ रुगायस्मात्रयश्चादि
यतादीनाश्च नागर्तं कलवैरुर्थकादीनि नागयत्समवगादपि ॥ १०५ ॥ अविनिता निवार्थानि सदा त
स्य रुवन्किरु ॥ अलक्ष्मी गमनी कृया दुःखदा विदुमर्दनी ॥ १०६ ॥ लक्ष्मी ध्वनि विख्याता वदुःखगमयना
हवे ॥ महालक्ष्मी महाकाक सर्वसो रायदायिनी ॥ १०७ ॥ मदिनानन्द वेगन्या महायुक्ति तलायना ॥ अत्र
नदसमरुतात्मा विष्वद्व्यावृता विना ॥ १०८ ॥ वाक्कात्री डावकीमात्रा वैष्णवी ध्यायना वका ॥ माहृद्वी वार्द्धि
कायेव वल्लिका कृकथा गिनी ॥ १०९ ॥ अष्टदंवा महासिद्धि ॥ सिद्धि या गिनि मध्यागा ॥ युज्यद्विविधा कात्र
र्नधमालादि पूषके ॥ ११० ॥ धूययत्पूत्र कर्ण्युर्न कसूर्यावसमायुर्न ॥ आवाधिता जगत्सर्वं जेलाक्षमपि
युक्तिर्न ॥ १११ ॥ गजाग्रमहिषाक्षग ॥ भवोपेव विवर्द्धयत् ॥ उवाप्यर्षि गिना राजा जयत्सर्वं मुदा वृध ॥
११२ ॥ वदुना रुकिमूकान् अविनिता नि सिद्धयत् ॥ समवगादु सदा दवी दुःखदा विदुना गिनी ॥ ११३ ॥ न
मस्तु महादवी नमस्तु विष्वद्व्यापिनी ॥ नमस्तु जगेतामात ॥ सिद्धिलक्ष्मी नमस्तु न ॥ ११४ ॥ ॥ अन्तिम ॥ ३३

द्विलक्षप्रत्यभिज्ञासूत्रमायः॥ ॥ इति पूर्वार्धिकावीश्वरवृत्तवर्तिनः कालवाणीरुवाणी उच्यते
कृत्तिकाख्या नवनवकधिया सिद्धिलक्ष्यपत्राख्याः कामानाख्यापत्राख्या विदुवनजननी राजराज
धनीर्त्तुकासानकवृषा विदुवनजननी नीमिदवीकुमात्री ॥ १४७ ॥ त्वमसि यत्र मकीली सिद्धिल
क्षस्त्वमेव त्वमसि यत्र मयत्रुडयत्रुडो त्वमव त्वमसि यत्र मराक्षी राजराजधनीर्त्तुसकलतिरि
तगच्छ सर्वसिद्धिददातु ॥ १४८ ॥ नान्यवदामिनत्रिनामिनत्रिक्रयामि नान्यस्मन्नामिनरुजामिन
वाप्रयामि त्वत्कालदीयत्रलाभूजमन्यदवमातः स्वकृतिकृपयाममदहिसिद्धि ॥ १४९ ॥ य
थावानद्यादि ॥ भूवृगन्मादि ॥ पार्थना ॥ गमयच्छाय ॥ तथ्येन ॥ यीतः यतामेनस्क रुवरुयहुर
ला रुवर्वमनुमूर्ति प्रणीतप्रणामनस्क गलपुत्रवदूकाला कयाला रुनीन्द्रा वक्षायकासूनीका ॥
धिरुगलमकलामातः ॥ कृपयाला योगिनायागयूका ॥ कलजलवैलषेयला ॥ यानमनस्यिवनु ॥
धिवदुदवता सर्वा सुबुद्धा ॥ मगलाधिया ॥ योगिना ॥ कृपयाला ॥ तवदहवृत्तिना ॥ वाक् ॥ नमः

प्रीनाथाय नमः प्रीतिनाथाय नमः प्रीकृष्णनाथाय नमः ॥ अथ वृषयुजा ॥ लंखनं वृ
षयल ॥ ॥ न्यासः ॥ कर्लिकाय अमुनाय रुट् कर्लिकाय ददयाय यादि व व ददयादि व ठं गन
कना न न्यासः ॥ यूजन ॥ जं काली वज्रं श्रीलाहनदाय नमः ॥ ३ ॥ खं ददयाय यादि ॥ स्नात ॥ ख
यखलनागाय गकिः कार्याय तत्येनं ॥ य पुच्छ ददयाय गीयं खदुनार्थं नमास्तुत ॥ अथ गन्धदि ॥
॥ तिवृषयुजा ॥ ॥ अथ ययुजाग ॥ दन्दनं डत खल सत ॥ ७ ॥ वायक ॥ रुः अमुनाय रुट् ॥ वलिः ॥ विष्
व ॥ ३ ॥ रुताय विविधकारा रुविदीया नृग्रीक गभयाताल तल वासिन्यां सस्तिताये निवा रुया ॥ व
लिः ॥ मताविय ॥ सूयकासायादि ॥ वलिः ॥ काय ॥ ॥ लंखनहाय ॥ दुकारं वा ॥ यत ॥ प्रीखलुचन्द्र ॥ सि
धव ॥ वीनं व्रीमहा ॥ खान ॥ नाना पुष्पायादि ॥ ॥ धतखल ॥ ॥ स्याककाया तावत सिधव खान वि
य ॥ ॥ मूलमनुन न्यासः ॥ ॥ यूजा ॥ ॥ न्यासित कलाय नमः ॥ मादस ॥ ॥ जैगानिकलाय नमः ॥ ल
गभउस ॥ ॥ द्रुविद्या कलाय नमः ॥ लरुस ॥ ॥ जौषतिषा कलाय नमः ॥ लिंगस ॥ ॥ जौनिवृलिकलाय नमः ॥

कृष्णदण्डः ॥ लामविलामनपूजा ॥ षष्ठं गनपूजा ॥ अत्र क्रमपातआदाव ॥ गयत्री ॥ ॐ वसुधा
सायविष्णुर्विश्वकर्मायिधीमहं तन्नाजीवयवाद्ययात् ॥ समयसूर्यपात्रसधुदावदुत्तुन
कं ॥ कागललखआदावतय ॥ ॐ अयादि ॥ वाक् ॥ पुरुषासिद्धवर्गियुगयाउपयावितं
। अस्यापिस्वर्गसंघाफिष्टीशसिद्धिलक्ष्मीप्रयत्नम् ॥ मूलादवावस्यायाव ॥ उरुल्लोवजयादि ॥
अमुनसूर्यपात्रनहाय ॥ निवक्तुदनयायक ॥ धमआदावहीनतयक ॥ निवक्तुय ॥ कं उक्तुय ॥
ॐ तिपञ्चजाग ॥ मूल ॥ कं ३ दूय ॥ पूजनपूर्ववत् ॥ ययक्तुय ॥ निखूतकृतक ॥ उताखलुकुथि
स ॥ धागागयायक ॥ लिमिक्तुय ॥ आयालठा ॥ हिमोलरुय ॥ मर्जादार्थधूनक ॥ हिदाय ॥ तिला
हिलायाय ॥ रुंजालखालस मतापूजाआपयक ॥ कं १ हास धात्र ॥ निकयाकवास ॥ यंत्राय
वात्रपूजाआपयक ॥ कं १ दूय धात्र ॥ दूयिनिमाशुर्क ॥ मानध्वनीय ॥ कं १ दूय ॥ तलदधुर्कय ॥ श
पयात्रपूजाआपयक विधिवत् ॥ कं १ दूय ॥ आचार्यामालक्ष्य ॥ धवनिलयाय ॥ नासान

नावयूवता नवरात्रदूधसुनिष्यकर्मयाय ॥ विधिवत् ॥ ॥ नवरात्रपिथुसंजीयक ॥ ॥ वंकुलि
संजीयक ॥ ॥ एतादृशिसमंनयासागधूनकाव ॥ बलिदत्त ॥ ॥ तलदूधसंनयासागयाय ॥
मानंघ्वनीसंनयासागयाय ॥ अरिषकलं धूनक ॥ ॥ समयच्छाय ॥ ॥ तथ्यन ॥ जयनिकाठी ॥ ॥ क
रं कपूजा ॥ कलंकच्छाय ॥ ॥ अरिषक ॥ वाधवदायक ॥ धनतलदूधया ॥ ॥ निखूतपक्ष ॥ काया
लकाकाय ॥ नाय मातंगी पिच्छाय ॥ हिवालक ॥ वांगुपूजाच्छाय ॥ ॥ तलदूध मानंघ्वनी निष्यक
र्मयायक ॥ ॥ घाथयाय नवरात्रस ॥ यजमानया निष्यकर्म हासपूजा दूधनिमाशुर्व ॥ ॥ धातया
गुल ॥ थायथायसंच्छाय ॥ ॥ आयात ॥ गलायाकात आमनुनयावकलच्छाय ॥ आयातलिथनक ॥
आयातलं सूत्रायटसुपनयायक ॥ यजमानर्था ॥ गलकालवन ॥ विधिवत् ॥ गलकोमात्राचन
॥ ॥ नवकसराग ॥ नवरात्रसकोमात्राचन ॥ वाहालच्छाय ॥ लिथनक ॥ ॥ गललिहाविश्रुक्
॥ समययाय ॥ ॥ विधिवत् ॥ याकातकोमात्राचन ॥ कीर्तनयायक ॥ दाघ्यापिठ ॥ याकातपिठा

विष्णुवक्त्रं ॥ वायनसह ॥ ॥ समययाय ॥ मताविद्य ॥ दूधपिधुर्म ॥ ॥ वं कलिपवलिङ्गाय ॥ सूत्रा
यठविसर्जन ॥ ॥ यजमानर्था ॥ आवाययाय ॥ ॥ त्रिंशतीतीराजकुलरुद्रात्रकस्यपार्वयार्थक
भनमहानवमीपार्वत्यखरुगागावर्जनपूजाविधिः समाप्तः ॥ ७ ॥ ॥ सम्वत् ६१४ कार्तिकव
दि ३ वाहिनीयत्रमृगशित्तसिद्धिथागभाद्रिपदात्र ॥ धृक्कृ ॥ श्रीश्रीसुमतिजयजितामित्रमस्तु
यवसनमहानवमीयाविधिश्चर्मरुलिरागपूजाया ॥ दयकार्त्तवा ॥ यत्रपूर्वकननिधानया
यमाल ॥ अन्नरुलाशमतव ॥ क्लान्तीसाधकयनिमनमजिकाक्लाकमाल ॥ ॥ गुरुमस्तु सर्वदा ॥ ॥
यादृगपूष्कंददृक्तादृगलिविर्तमया ॥ यदिपुष्टमपुष्टंवा ॥ समयाधानदीयत ॥ ॥ श्रीश्रीश्रीस्वस्त्य
दवीपीनाहु ॥ ॥ ॐ ॥ गुरु ॥





















